के. डी. न्यूज

सुलतानपुर से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

UPHIN 47497

वर्ष–01 अंक 04 सुलतानपुर शुक्रवार 08 नवम्बर 2024 मूल्य : दो रूपया पृष्ठ : 4

कांग्रेस की वही स्थिति हो जाएगी, जो जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 का हुआ...–सीएम योगी

संवाददाता।

लखनऊ योगी आदित्यनाथ ने इस दौरान जम्मू कश्मीर का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कश्मीर से धारा 370 केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में हटाए। उन्होंने कहा कि 370 समाप्त कर मोदी सरकार ने आतंकवाद पर अंतिम कील ठोकने का काम किया था।छठ महापर्व के अवसर पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को लखनऊ में गोमती घाट पर लक्ष्मण मेला मैदान पहुंचे और छठ पर्व में हिस्सा लिया। योगी आदित्यनाथ ने वहां छठ पूजा किया और इसके बाद मौजूद लोगों को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि आज छठ मां पर न केवल भोजपुरी समाज का बल्कि अखिल भारतीय समाज का उत्सव बन गया है। उन्होंने आगे कहा कि भोजपुरी समाज आज संपूर्ण विश्व में श्छठश की सुगंध को अपने साथ ले जाकर श्एक भारत–श्रेष्ठ भारतश की परिकल्पना को साकार कर रहा है। श्छठश महापर्व की हृदय से बधाई एवं इस आयोजन हेतु अखिल भारतीय भोजपुरी समाज को ढेरों शुभकामनाएं! उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि हमारे पर्व और त्योहार तभी तक जीवित है, जब तक हमारा राष्ट्रीय धर्म जीवित है। पर्व–त्योहार हमें जोड़ते हैं। लेकिन हमारा राष्ट्रीय धर्म भी होना चाहिए। राष्ट्रीय धर्म में हर काम देश के नाम होना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी यही करते हैं और उनका संकल्प भी यही है। उन्होंने साफ तौर कहा कि हम जहां पर्व–त्यौहार के माध्यम से लोगों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं तो कुछ लोग ऐसे भी हैं जो भारत में रहकर भारत की संस्कृति, भारत के अस्तित्व के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्य जो लोग भी कर रहे हैं, किसी भी भारतवासी को यह बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब 140 करोड़ भारतवासी एकजुट होकर एक साथ बोलते हैं तो पूरी दुनिया हमारी बात सुनती है।योगी आदित्यनाथ ने इस दौरान जम्मू कश्मीर का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कश्मीर से धारा 370 केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में हटाए। उन्होंने कहा कि 370 समाप्त कर मोदी सरकार ने आतंकवाद पर अंतिम कील ठोकने का काम किया था। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया को लगा कि यह नया भारत है। यह नया भारत किसी का नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

नायब तहसीलदार ने हो रहे अवैध खनन को लेकर किया बड़ी कार्यवाही

सहजनवां तहसील क्षेत्र के सिसई में अवैध खनन मे लिप्त चार डम्फर एक पोकलेन मशीन पकड़ा

सहजनवा गोरखपुर ।सहजनवां तहसील क्षेत्र में हो रहे अबैध खनन को लेकर नायब तहसीलदार दुर्गेश चौरसिया ने किया बड़ी कार्यवाही इस कार्यवाही से अबैध खनन कारोबारियों मे हड़कम्प मचा हुआ है सहजनवां तहसील क्षेत्र के सिसई मे अबैध खनन की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे नायब तहसीलदार दुर्गेश चौरसिया ने चार डम्फर समेत एक पोकलेन मशीन को पकड़ कर सहजनवां थाने को सुपुर्द कर दिया और अग्रिम कार्यवाही में जुट गए सिसई मे हो रहे अबैध खनन की जगह पर सहजनवां पुलिस को बुलाया गया जहाँ पर पाच अदद वाहन एक अदद पोकलेन टाटा हुटैची रेड कलर माडल नं0–म्2102ब्न्च्म् च्स्न्ड ।ब्म्प्छम्ृच 21–61856 व डम्फर यूपी 53 जे टी 8836, यूपी 53 के टी 2653, यूपी 53 केटी 2655 व एक डम्फर जिसपर नम्बर नहीं लगा हुआ था खनन करते हुए पकड़े गये जिनसे खनन का कागज माँगा गया तो प्रस्तुत नहीं किया गया तथा पोकलेन व डम्फर वाहन उपरोक्त को सुरक्षार्थ सुपुर्द किया गया। पोकलेन को गाँव में सुरक्षार्थ खड़ी कराया गया व डम्फर उपरोक्त को थाना परिसर के बाहर लाकर खड़ी कराया गया। डम्फर उपरोक्त के चाभी को हे०मु० अवधेश यादव को सुपुर्द किया गया।वही खनन अधिकारी गोरखपुर आर पी सिंह ने बताया कि तहसील के द्वारा हमको कार्यवाही का कागजात भेजा जायेगा तो उसपर जुर्माना लगा कर कार्यवाही किया जायेगा वही मौके पर तहसीलदार सहजनवा, नायब तहसीलदार पाली लेखपाल सुनील सिंह, लेखपाल अनुज मिश्रा, थाना सहजनवा पुलिस टीम मौके पर मौजूद रहे।

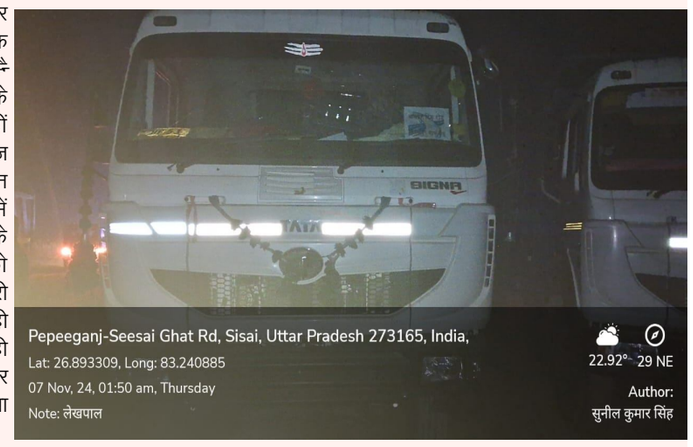

शराब के नशे में दंपत्ति को दे रहा था गाली विरोध करने पर पीटा केस दर्ज

पिपरैली गोरखपुर ।गीडा थाना क्षेत्र के बाघागाड़ा में एक मनबढ़ शराब के नशे में दंपत्ति को गाली गलौज कर रहा था। जब दोनों ने विरोध किया तो वह अपने स्वजन के साथ मिलकर दोनों को पीट कर घायल कर दिया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी से बाघागाड़ा निवासी विंद्रावती देवी पत्नी ओम प्रकाश दंपति 4 नवंबर को रात्रि में10 बजे घर पर थे। उसी दौरान एक मनबढ़ उन्हें देखकर गाली गलौज करने लगा विरोध करने पर वह अपने स्वजन को बुला कर लाठी डंडे से पीट कर घायल कर दिया। पुलिस ने आरोपी भोला यादव, प्रतीक यादव उर्फ किशन, पंकज यादव के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

पानी भरने को लेकर पीटा केस दर्ज

पिपरौली गोरखपुर ।गीडा थाना क्षेत्र के पिपरी निवासी राधेश्याम यादव पुत्र राम सजन यादव जो एक आरो पर पानी भर था। उसी दौरान तीन की संख्या में मनबढ़ उसे गाली गलौज करते हुए मारपीट कर घायल कर दिए। पुलिस ने पीड़ित की8 शिकायत पर मनीष निवास तथा दो अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

व्रती महिलाओ ने दिया अस्तांचल सूर्य को अर्घ्य

घघसरा गोरखपुर ।नगर पंचायत घघसरा तुलसीदास नगर सहित सभी वार्डों में लोक आस्था का महापर्व बड़े ही धूम–धाम से मनाया गया। चेयरमैन प्रभाकर दुबे ने सभी वार्डों में घाटों पर पहुंच कर निरिक्षण किया। छठ महापर्व पर पाली क्षेत्र सुरदही नेवास, रिठुआखोर, पाली, मिनवा, इत्यादि गांवो स्थित जलाशय पर जुटीं व्रती महिलाओं ने अस्ताचल सूर्य को अर्घ्य दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में व्रती महिलाएं, पुरूष और बच्चों की भीड़ रही।नहाय खाय से शुरू होने वाली डाला छठ बुधवार से शुरू हुआ। इस पर्व का बड़ा महत्व है। प्रत्येक वर्ष की तरह यहां व्रती महिलाओं ने गुरुवार को ढलते सूर्य को अर्ध्य देकर आशीष मांगा। शुक्रवार को प्रातरू व्रती महिलाएं उगते सूर्य को अर्ध्य देकर पारण करेंगी। यहां व्रत रखने वाली महिलाओं के मुताबिक नहाय खाय के दिन व्रत रखने वाली महिलाएं नई फसल के चालव का भात, चना दाल और खासकर लौकी का प्रसाद बनाकर ग्रहण करती हैं।रविवार को ढलते सूर्य को अ्ध्य देने के दौरान नगर पंचायत अध्यक्ष प्रभाकर दुबे, सभासद शिवानंद पाण्डेय, दिनेश पाण्डेय, रामचंद्र पाण्डेय, रवि पाण्डेय, उमाशंकर पाण्डेय, विनोद पांडेय, नरसिंह, ग्राम प्रधान महेन्द्र यादव, रत्नेश शुक्ल, सहित अन्य की संख्या में सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

गांव मे पहुंचे विपणन निरीक्षक ने किया पंजीकरण

घघसरा गोरखपुर ।नगर पंचायत घघसरा के डुमरी गांव मे विपणन निरीक्षक पवन पाल सिंह ने मौजूद लोगो का धान खरीद के लिए किसान पंजीकरण किया हैध् जिससे क्षेत्र के किसानो के खेत मे उपजे धान के बेचने मे सुविधा मिलेगी। सरकार की मंशा के अनुरुप किसानो के उपज को सरकारी क्रय केंद्रों पर खरीदने के लिए गाव गांव अधिकारी कर्मचारी पहुंच रहे है। इस मौके पर डुमरी के सभासद विजय प्रताप राज, नीतु राज, दुर विजय राज, पूर्व प्रधान अजीत राज, विकाश राज, सुशील राज, मनोज राज, सहित सैकड़ों की संख्या मे लोग मौजूद रहे ।

पुर्वांचल की सबसे बड़ी रेडिमेड गारमेंट इंडस्ट्रीज का हुआ भूमि पूजन

सहजनवा गोरखपुर ।सहजनवां क्षेत्र के गीडा सेक्टर–26 में वृहस्पतिवार को सोना रेडिमेड गारमेंट इंडस्ट्रीज का भूमि पूजन विधि विधान से सम्पन्न हुआ।, 5 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाली सोना इंडस्ट्रीज में मेंस और लेडिज गारमेंन्ट के उत्पाद बनाए जाएगे। यह इंडस्ट्रीज पूर्वांचल की सबसे बड़ा रेडिमेड गारमेंट इंडस्ट्री होगी। सोना रेडिमेड गारमेंट इंडस्ट्रीज के प्रो. आकाश यादव ने बताया की इस इंडस्ट्री में लगभग 400 लोगों को प्रत्यच्छ रुप से रोजगार मिलेगा, सोना इंडस्ट्रीज में दिल्ली और अहमदाबाद के तर्ज पर उत्पाद तैयार किये जाएगें, जिससे यहां के स्थानिय व्यापारियों को लाभ मिलेगा, फैशन साइंस के नाम से इसके उत्पाद मार्केट में जाएगें। इस मौके पर सोना इंडस्ट्रीज के प्रोपराइटर आकाश यादव की माता जी सोना यादव ने भूमि पूजन किया। इस मौके पर रमाशंकर शुक्ला अध्यच्छ चेम्बर आफ रेडिमेट गारमेंन्ट उ.प्र., शिव चन्द्र राय,गारमेंन्ट समूह के सभी उघमी समेत मुनीश यादव, आमीर उज्जमा अंसारी, मनीराम यादव, जितेन्द्र यादव, हनुमान

आपसी विवाद में दो पक्षों के बीच हुआ हवाई फायरिंग, पिटाई से एक युवक की हालत गंभीर

उरुवा गोरखपुर। उरुवा थाना क्षेत्र के मठ शोभा गांव के समीप दो पक्षों में कहासुनी के बाद एक पक्ष द्वारा देशी तमंचे से फायरिंग के बाद दहशत का माहौल हो गया।आक्रोशित ग्रामीणों ने एक युवक की जमकर पिटाई के बाद पुलिस को सौंप दिया।इस घटना में तीन अन्य युवकों को हिरासत में लेकर पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है। मामला आशनाई का बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार उरुवा थाना क्षेत्र के गांव गोलीपार के एक युवती को लेकर विवाद हो गया।इसी बीच किसी एक पक्ष द्वारा देशी तमंचे से दो राउंड फायर कर दिया गया।जिससे ग्रामीण दहशत में आने के साथ ही आक्रोशित हो गए।और एक व्यक्ति की जमकर पिटाई कर दी। किसी ग्रामीण की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस युवक के साथ ही तीन अन्य युवकों को हिरासत में ले कर जांच में जुटी है।और एक देशी तमंचा भी बरामद किया है।जबकि समाचार लिखे जाने तक युवक का प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उरुवा में इलाज चल रहा था।

छठ व्रती महिलाओं ने आस्ताचलगामी सूर्य को अर्ध्य अर्पित कर मनाया छठ का पर्व

सहजनवा गोरखपुर ।7 नवम्बर दिन बृहस्पतिवार को छठ का व्रत रखती महिलाओं ने भगवान भास्कर के सूर्योपासना का महापर्व छठ पूजा पर निर्जल व्रत रखकर श्रद्धालु व्रती महिलाओं ने पुत्र प्राप्ति व उसकी कुशलता के साथ दीर्घायु की कामना तथा पूरे परिवार की सुख समृद्धि के लिए विधिवत पूजा अर्चना कर अस्ताचलगामी डूबते भगवान सूर्य को अर्ध्य अर्पित किया.। पूरे सहजनवा तहसील क्षेत्र के सभी गांवो नगर पंचायतो तालाबों एवं पोखरों पर लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा पर नदी घाटों व गावों छठ माता के गीत को गाते हुए व्रती महिलायें व उनके परिवार के लोग हर्षोल्लास के साथ नदी तालाबों व पोखरों में किनारे पहुच कर जल में प्रवेश कर हाथों में पूजा की थाली लेकर आराधना करते हुए डूबते भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर मंगल कामना किया। व्रत का समापन शुक्रवार को उगते भगवान सूर्य को अ्ध्य देने के बाद करेंगी।व्रती महिलाएं पुनः गीत गाती हुयी अपने अपने घर पर पहुचकर अपने देवी देवताओं की पूजा अर्चना कर पारण करेंगी। नगर पंचायत सहजनवा भीटी रावत क्षेत्र के सीहापार, कसरवल, कुआवल कला, सहबाजगंज घुरियापार, टेकुआपाती, सहित मुण्डा,आदि गावो में लोगो ने धूम धाम से लोक आस्था का महापर्व छठ व्रत पर जाकर भगवान सुर्य को अर्ध्य अर्पित किया।महापर्व छठ पूजा पर स्थानीय प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद दिखा। वही लालमती–पिताम्बर सामाजिक सेवा संस्था की तरफ से सीहापार व मगहर स्थित छठ घाट पर साफ सफाई पथ प्रकाश व्यवस्था बैरिकेटिंग सजावट आदि की व्यवस्था सुदृढ़ किया गया था.।

गोरखपुर में निर्माणाधीन ओवरब्रिज का गर्डर गिरा

एसएसबी इंस्पेक्टर की मृत्यु, एक अन्य गंभीर घायल

गोरखपुर । दिनांक 07 नवंबर 2024 की सुबह लगभग 9.40 बजे गोरखपुर के चिलुआताल थाना क्षेत्र के नकहा जंगल रेलवे स्टेशन के पास स्थित गेट संख्या 05 स्पेशल के समीप, मित्तल ब्रदर्स कंपनी द्वारा गतिशक्ति विभाग के अंतर्गत निर्माणाधीन ओवरब्रिज पर एक गंभीर हादसा हुआ। हाइड्रा क्रेन के माध्यम से लोहे का भारी गर्डर उठाते समय अचानक चेन टूटने से गर्डर नीचे गिर गया। इस दुर्घटना में एसएसबी के निरीक्षक विजेंद्र सिंह कोठारी (उम्र लगभग 45 वर्ष), जो एसएसबी सेक्टर हेडक्वार्टर फर्टिलाइजर चिलुआताल गोरखपुर में नियुक्त थे, गर्डर के नीचे दबकर घटनास्थल पर ही मृत्यु को प्राप्त हुए।उनके साथ बाइक पर पीछे बैठे मनय कुंडू को गंभीर चोटें आईं और उनका इलाज जारी है। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस, आरपीएफ और जीआरपीएफ के अधिकारी बचाव कार्य में तुरंत मौके पर पहुंचे। पुलिस ने निरीक्षक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बीआरडी मेडिकल कॉलेज भेज दिया है। उल्लेखनीय है कि ओवरब्रिज निर्माण कार्य के दौरान मार्ग पर बैरिकेडिंग की व्यवस्था नहीं की गई थी, जिससे यह हादसा हुआ।

इकोनामिक एसोसिएशन के तीन दिवसीय 20वें वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन 9 से 11 नवम्बर 2024 तक

सहजनवा गोरखपुर । केआईपीएम संस्था के अध्यक्ष आर डी सिंह, प्रबंध निदेशक विनोद कुमार सिंह एवं निदेशक मैनेजमेंट डॉक्टर जयवीर प्रताप सिंह ने कहा भाइयों आप सभी को बताते हुए आपार हर्ष हो रहा है कि के. आई. पी. एम कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट गीडा गोरखपुर के प्रांगड़ में उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड इकोनामिक एसोसिएशन के तीन दिवसीय (दिनांक 9 से 11 नवम्बर 2024 तक) 20वें वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र के अमृत काल में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे बिजनेस मैनेजमेंट को समावेश करते हुए 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करना है। राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ दिनांक 9 नवंबर 2024 को कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि रजनी तिवारी राज्यमंत्री उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश सरकार के कर कमलो द्वारा दीपप्रज्वलित कर किया जाएगास उद्घाटन समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर पूनम टंडन जी, कुलपति, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, के कुलपति प्रोफेसर एनएनपी वर्मा जी एवं प्रोफेसर सतीश चंद्र द्विवेदी जी, पूर्वमंत्री, बेसिकशिक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार होंगेस इस उद्घाटन सत्र के दौरान बृजेश पाठक, माननीय उपमुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर सम्मेलन के उद्देश्यों पर अपनी बात रखेंगे। इस राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य भारत देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बेहतर स्थान दिलाने के लिए आवश्यक नीति, योजनाएं और प्रबंधन समाधानों पर विचार करना हैस यह कार्यक्रम भारतीय समाज की समृद्धि, समावेशी विकास और सतत वृद्धि के लिए नई दिशा और मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

भारत स्काउट और गाइड का स्थापना दिवस मनाया गया धूम धाम से

गोरखपुर ।अयोध्या दास स्काउट कुटीर में भारत स्काउट और गाइड का 75 वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त राकेश सैनी ने बताया कि भारत में 7 नवंबर 1950 को स्काउट गाइड की स्थापना हुई और वर्तमान में कुल 56 स्टेट के रूप में संस्था संचालित है। स्थापना दिवस कार्यक्रम में जिला आयुक्त एडल्ट रिसोर्स स्काउट ज्ञानेन्द्र ओझा ने कहा कि स्काउट गाइड के नौ नियम एवं प्रतिज्ञा को आत्मसात कर भारत स्काउट और गाइड संस्था के उद्देश्यों को सफल बनाकर नागरिकों में मानव सेवा एवं देश प्रेम की भावना विकसित की जा सकती है। स्थापना दिवस कार्यक्रम का संचालन करते हुए जिला सचिव रंजना राय ने कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण से सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। स्थापना दिवस कार्यक्रम में इशरत सिद्दीकी, अजय कुमार सिंह, प्रतिमा शुक्ला, ओम प्रकाश उपाध्याय, अजय गुप्ता बजरंगी एडवोकेट, राजेश चंद चौधरी, चंद्रकांति गुप्ता, शशांक पाण्डेय, दुर्गावती धूसिया, लाजोरानी, गौरी गुप्ता, अभिजीत गौड़, कुमारी सेजल, आदित्य यादव, श्याम आदि स्काउट गाइड उपस्थित रहे।

शहीद सम्मान यात्रा का चौरी चौरा में हुआ भव्य स्वागत

चौरीचौरा गोरखपुर। शहीदों की क्रांतिकारी धरती चौरी चौरा में गुरुवार को देश के गुमनाम शहीदों की याद में देवरिया से निकलकर पूरे प्रदेश का भ्रमण करके पहुंची शहीदों की रथ यात्रा का चौरी चौरा में ग्राम प्रधान श्रवण कुमार मौर्य के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया गया ।

रथ यात्रा के संयोजक पूर्व विधायक बृजेश प्रजापति तथा दिलीप चौधरी का देवीपुर मे भव्य स्वागत किया गया। तद्उपरांत शहीदों की याद में रैली निकाल कर चौरी चौरा शहीद स्मारक पर पहुंचकर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक बृजेश प्रजापति ने कहा कि भारत के तमाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी है जो आज भी गुमनाम है । उन्ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानियोंमेंदेवरिया में शहीद हुए रामचंद्र विद्यार्थी का नाम भी स्वर्ण अक्षरों में अंकित है । रामचंद्र विद्यार्थी ने 14 अगस्त 1942 को देवरिया के कचहरी भवन पर तिरंगा फहराकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में 13 वर्ष की उम्र में शहीद हो गये थे। अंग्रेजों ने उन्हें फांसी के फंदे पर लटका दिया था। रामचंद्र विद्यार्थी को भारतीय इतिहास के सबसे कम उम्र के क्रांतिकारी घोषित करने तथा इतिहास की किताबों में एनसीईआरटी में शामिल करने तथा सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग की गई ।इस अवसर पर दिलीप चौधरी हरिवंश प्रजापति योगेंद्र मौर्य डॉक्टर बलविंदर प्रजापति रवि प्रजापति महेश प्रसाद रामप्रीत राम सिंह विनय कुमार इत्यादि लोगों ने भी जनसभा को संबोधित किया।

छठ व्रत में महिलाओं ने डूबते सूर्य को दिया अर्ध्य

पिपरौली गोरखपुर ।लोक आस्था के पर्व छठ महापर्व पर पिपरौली ब्लाक के अमटौरा गांव में श्री राम जानकी मंदिर पोखरा पर एवं पिपरौली दुर्गा मंदिर पोखरा पर सैकड़ो की संख्या में महिलाओं ने डूबते हुए सूरज को अर्घ्य देकर छठ महापर्व का शुभारंभ किया। कल उगते हुए सूरज को अर्घ्य देकर छठ महापर्व की समाप्ति की जाएगी। इस अवसर पर गीडा थाना की तरफ से फोर्स तथा सहजनवा विधायक प्रदीप शुक्ला, पूर्व प्रधान देवी शरण, आशु गुप्ता, सूरज निगम, प्रेमपाल गुप्ता, सुनील निगम, रवि प्रकाश सिंह, राजेंद्र सिंह, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि श्रीराम शर्मा उर्फ मोनू शर्मा, शिव शंकर सिंह, जुगल किशोर गुप्ता, राणा विजय सिंह, धीरज साहनी सहित अन्य की संख्या में सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

विधायक प्रदीप कुमार शुक्ल ने किया घाट का निरीक्षण

सहजनवां गोरखपुर ।लोक आस्था का महापर्व छठ वृहस्पतिवार को क्षेत्र में संध्याकालीन सूर्य को अर्घ्य देकर मनाया गया। व्रती महिलाओं ने दिनभर

निर्जल व्रत रखकर शाम के समय अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया गया। इस दौरान खानिमपुर, कालेसर, जैतपुर, साथीपार, भीटी खोरिया, नगरा, भगवानपुर फरसाडांड, सहित अन्य घाटों पर महिलाएं नंगे पांव सिर पर बांस की टोकरी में पूजा सामग्री, फल, ठेकुआ सजाकर घाट तक पहुंचीं।इस दौरान महिलाएं छठी मैया के गीत गाती रहीं। भगवान भास्कर के अस्ताचलगामी होने तक महिलाएं पानी में पूजा सामग्री लेकर खड़ी रहीं। सूर्य भगवान के अस्त होते समय महिलाओं ने अर्घ्य दिया। इस दौरान वरिष्ठ नेता विकास पाण्डेय, ब्लॉक प्रमुख दिलीप यादव, छोटेलाल मौर्य, शिवमचंद, तेजनारायण पांडेय, आलोक पांडेय रामबुझारत पासी, सहित स्थानीय पुलिस उपस्थित रहे ।

सम्पादकीय...

देश में आतंक का माहौल

सुरक्षा के मोर्चे पर चुस्ती और सख्ती के तमाम दावों के बावजूद देश में आतंक का माहौल क्यों लौट रहा है? झूठी धमकियां देने वालों या हमले की तैयारी में लगे समूहों के बारे में खुफिया एजेंसियां पूर्व सूचना क्यों नहीं जुटा पा रही हैं?

जम्मू–कश्मीर में निर्वाचित सरकार के पद संभालने के कुछ दिनों के अंदर ही आतंकवादियों ने कहर ढाया है। श्रीनगर–लेह राजमार्ग पर सोनमर्ग के पास रविवार को उनके हमले में सात लोग मारे गए। इनमें ज्यादातर दूसरे राज्यों से आए कर्मी हैं, जो वहां निर्माण कार्य में लगे थे। दो बातें खास हैं। कश्मीर घाटी में जारी निर्माण कार्यों से संबंधित स्थल पर हाल के वर्षों में हुआ यह पहला हमला है। फिर यह वहां हुआ, जिसके बारे में पिछले एक दशक से माना जाता था कि वह इलाका आतंकवाद के साये से मुक्त हो चुका है। बताया गया है कि ताजा हमला पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने किया।

जिस रोज यह हमला हुआ, उसी दिन नई दिल्ली के रोहिणी इलाके में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के बाहर बम धमाका हुआ, जिससे स्कूल परिसर की बाउंड्री वॉल क्षतिग्रस्त हो गई। प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। उधर रविवार को ही 25 उड़ानों के दौरान उनमें बम होने की धमकी मिली, जिस वजह से उनकी इमरजेंसी लैंडिग करानी पड़ी। इसके पहले शनिवार को 30 से ज्यादा उड़ानों को ऐसी धमकियां मिली थीं। ये सभी फर्जी निकलीं, मगर दोनों दिन इनकी वजह से हवाई यात्राएं बाधित हुईं और यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। दरअसल, थोड़ा पीछे जाकर देखें, तो काफी समय से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्कूलों और अस्पतालों में बम होने की धमकियां मिल रही हैं।

अब तक ये धमकियां फर्जी साबित हो रही थीं, लेकिन रविवार को आखिरकार सचमुच विस्फोट हो गया। ऐसी घटनाओं ने देश में आतंक का माहौल लौटा दिया है। इससे सवाल उठा है कि सुरक्षा के मोर्चे पर चुस्ती और सख्ती के तमाम दावों के बावजूद देश में ये माहौल क्यों लौट रहा है? झूठी धमकियां देने वालों या हमले की तैयारी में लगे समूहों के बारे में खुफिया एजेंसियां पूर्व सूचना क्यों नहीं जुटा पा रही हैं? जम्मू–कश्मीर का मामला ज्यादा गंभीर है। जम्मू क्षेत्र आतंकवादी हमलों के नए ठिकाने के रूप में उभरा है, जबकि अब कश्मीर घाटी में भी ऐसी वारदातों ने फिर सिर उठा लिया है। आखिर क्यों?

राजनीतिक मकसद साधने की मंशा न हो

केंद्र सरकार ने जनगणना की अधिसूचना जारी नहीं की है, लेकिन एक, जनवरी 2025 से प्रशासनिक सीमाएं सील हो जाएंगी और उससे पहले भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त मृत्युंजय कुमार नारायण का कार्यकाल अगस्त 2026 तक बढ़ा दिया गया है, जिससे यह संकेत मिल रहा है कि अगले साल जनगणना होगी। उसके अगले साल यानी 2026 में लोकसभा सीटों का परिसीमन होगा और फिर इसी आधार पर 2029 में साथ होने वाले चुनाव में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की जाएंगी। इस बीच तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक बड़ा सवाल उठाया है। उन्होंने एक सामाजिक कार्यक्रम में, जहां 16 नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया जाना था, वहां कहा कि श्जब हम ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं, जहां संसद में सीटों की संख्या कम होने वाली है तो हमें छोटा परिवार क्यों रखना चाहिएश्?

इसके आगे उन्होंने नवविवाहित जोड़ों से ज्यादा बच्चे पैदा करने और उन्हें सुंदर तमिल नाम देने का आग्रह किया। हालांकि उन्होंने संसद में सीटों की संख्या कम होने के बारे में विस्तार से कुछ नहीं कहा लेकिन उनका इशारा परिसीमन के बाद की स्थितियों की ओर था। उनसे पहले आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने भी लोगों से ज्यादा बच्चे पैदा करने का आग्रह किया था। हालांकि उनका घोषित सरोकार यह था कि दक्षिण के राज्यों में आबादी बूढ़ी हो रही है और कामकाजी युवाओं की संख्या कम हो रही है। परंतु कहीं न कहीं वे भी इस बात से चिंतित हैं कि अगर आबादी के आधार पर लोकसभा सीटों का परिसीमन हुआ तो दक्षिण के राज्यों की राजनीतिक हैसियत घटेगी।तभी यह बड़ा सवाल है कि लोकसभा सीटों के परिसीमन का आधार क्या होगा? क्या सीधे तौर पर जनसंख्या के हिसाब से सीटों की संख्या में बढ़ोतरी कर दी जाएगी? अगर ऐसा हुआ तो उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों को फायदा होगा और दक्षिण भारत के राज्य घाटे में रहेंगे।

राजस्थान विधानसभा उपचुनाव: गढ़ बचाने में लगी पार्टियां

जिन सात विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हो रहे है। उनमें से प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा के पास सिर्फ एक सलूंबर की सीट थी। जहां उनके लगातार तीन बार के विधायक अमृतलाल मीणा के निधन के चलते उपचुनाव हो रहा है। भाजपा के लिए सलूंबर की सीट जीतना प्रतिष्ठा का सवाल बना हुआ है।राजस्थान में आगामी 13 नवंबर को सात विधानसभा सीटों पर होने जा रहे उपचुनाव के लिए वोट डाले जाएंगे। सात में से पांच विधानसभा सीटों झुंझुनू, दौसा, खींवसर, देवली–उनियारा, चौरासी में वहां के विधायकों के सांसद बनने के चलते इस्तीफा देने से उपचुनाव होने जा रहे हैं। वहीं सलूंबर व रामगढ़ में विधायकों की मृत्यु होने के चलते उपचुनाव हो रहे हैं। हालांकि इन विधानसभा उपचुनावो के नतीजों से प्रदेश की राजनीति में कोई बड़ा बदलाव होने की संभावना नहीं है। इससे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार को कोई खतरा होने वाला नहीं है।मगर इन उपचुनाव के नतीजे का असर प्रदेश की राजनीति में कई पार्टियों व उनके नेताओं के राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करेगा। 2023 के विधानसभा चुनाव में सात विधानसभा सीटों में से चार सीटों पर कांग्रेस पार्टी के विधायक थे। वही एक सीट पर भाजपा, एक पर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (रालोपा) व एक पर भारतीय आदिवासी पार्टी (बाप) का विधायक था।जिन सात विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हो रहे है। उनमें से प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा के पास सिर्फ एक सलूंबर की सीट थी। जहां उनके लगातार तीन बार के विधायक अमृतलाल मीणा के निधन के चलते उपचुनाव हो रहा है। भाजपा के लिए सलूंबर की सीट जीतना प्रतिष्ठा का सवाल बना हुआ है। इसीलिए भाजपा ने दिवंगत विधायक की पत्नी शांता मीणा को टिकट देकर सहानुभूति का लाभ उठाना चाहती है। इसके अलावा प्रदेश की अन्य विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव में भी भाजपा पूरी मजबूती के साथ चुनाव मैदान में उतरी है।

उपचुनाव में हार जीत के साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन 2014 व 2019 के लोकसभा चुनाव की तुलना में बहुत अच्छा नहीं रहा था। इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा चाहते हैं कि सभी सात सीटों पर उपचुनाव में उनकी पार्टी के प्रत्याशियों को विजय बनवाकर भाजपा आला कमान की नजरों में अपनी मजबूत छवि बना सके। भाजपा प्रदेश की सभी सातों सीटों पर पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ रही है। भाजपा ने समय रहते अपने सभी बागियों को मना कर एकजुटता का संदेश देने में सफल रही है। पार्टी के अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ उतरे बागियों को चुनाव से हटाने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयास सफल रहे हैं।प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों के उपचुनाव में विजय हासिल करने के चक्कर में भाजपा ने अपनी नीति व सिद्धांतों को भी ताक पर रख दिया है। दौसा सीट पर राजस्थान सरकार में मंत्री डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के भाई जगमोहन मीणा को प्रत्याशी बनाया है। जबकि दौसा सीट सामान्य वर्ग की सीट है। मगर भाजपा ने डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के दबाव में अनुसूचित जनजाति के प्रत्याशी को मैदान में उतार दिया है। डॉक्टर किरोडीलाल मीणा के भतीजे राजेन्द्र मीणा भी महुआ से विधायक है। इस तरह एक परिवार के तीन लोगों को पार्टी ने टिकट देकर परिवारवाद को बढ़ावा दिया है। वही 2023 के विधानसभा चुनाव में झुंझुनू से भाजपा के प्रत्याशी निशित कुमार उर्फ बबलू के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने वाले राजेंद्र भांभू व रामगढ़ से भाजपा प्रत्याशी जय आहूजा के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने वाले सुखवंत सिंह को टिकट देकर मैदान में उतार दिया है। देवली–उनियारा सीट पर भी भाजपा ने पिछली बार चुनाव लड़े कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैंसला का टिकट काटकर पूर्व विधायक राजेंद्र गुर्जर को मैदान में उतारा है। वहीं खींवसर सीट पर रालोपा के अध्यक्ष व नागौर के सांसद हनुमान बेनीवाल को पिछले विधानसभा चुनाव में कड़ी टक्कर देकर मात्र 2059 वोटो से हारने वाले रेवतराम डागा को फिर से मैदान में उतारा है। चौरासी सीट पर पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी की करारी हार हुयी थी। इस बार भाजपा ने वहां नया प्रत्याशी कारीलाल ननोमा को मैदान में उतारा है। भाजपा प्रत्याशी सीमलवाड़ा पंचायत समिति के प्रधान है तथा सादड़िया के सरपंच रह चुके हैं। अब उनकी पुत्रवधू रेखा सरपंच है। उनकी पत्नी हाकली देवी भी सरपंच रह चुकी है। क्षेत्र में अच्छी पकड़ होने के कारण राजनीतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि इस बार वहां भाजपा कड़ी टक्कर दे सकती है।कांग्रेस को अपनी चार सीट झुंझुनू, दौसा, देवली–उनियारा व रामगढ़ फिर से जितनी होगी। साथ ही अन्य तीन सीटों पर भी अपनी ताकत दिखानी होगी कांग्रेस ने झुंझुनू से सांसद बने बृजेंद्र सिंह ओला के बेटे अमित ओला को मैदान में उतारा है। अमित ओला ओला परिवार की तीसरी पीढ़ी है तथा उनके दादा शीशराम ओला झुंझुनू से पांच बार सांसद नौ बार विधायक केंद्र तथा राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे थे। वहीं रामगढ़ सीट पर दिवंगत विधायक जुबेर खान के पुत्र आर्यन खान को उतार कर सहानुभूति के बल पर चुनाव जीतना चाहती है। दौसा सामान्य सीट पर कांग्रेस ने अनुसूचित जाति के दीनदयाल बैरवा को टिकट देकर मैदान में उतारा है।

देवली–उनियारा से पूर्व अधिकारी कस्तूर चंद मीणा को मैदान में उतारा है। यहां कांग्रेस के बागी नरेश मीणा चुनाव को त्रिकोणात्मक बना रहे हैं। नरेश मीणा को कांग्रेस पार्टी मनाने में नाकाम रही है। जिसके चलते कांग्रेस प्रत्याशी की स्थिति ज्यादा बेहतर नहीं मानी जा रही है। सलूंबर में कांग्रेस ने 2018 में निर्दलिय चुनाव लड़कर कांग्रेस को हराने वाली रेशमा मीणा को मैदान में उतारा है। जिससे नाराज होकर सांसद, विधायक व मंत्री रह चुके रघुवीर मीणा अंदर खाने पार्टी प्रत्याशी को नुकसान पहुंचा रहे हैं। चौरासी सीट पर कांग्रेस पार्टी ने इस बार 29 साल के नए प्रत्याशी महेश रोत को मैदान में उतारा है। खींवसर सीट पर कांग्रेस पार्टी ने महिला प्रत्याशी रतन चौधरी को मैदान में उतार कर हनुमान बेनीवाल के वोट बैंक में बड़ी सेंध लगाई है। जिसका फायदा भाजपा को हो सकता है।खींवसर सीट पर रालोपा के अध्यक्ष हनुमान बेनीवाल की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। पिछला विधानसभा चुनाव वह मात्र 2059 वोटो से जीते थे। फिर कांग्रेस से गठबंधन कर नागौर से सांसद चुने जाने पर उन्होंने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया था। अब उन्होंने अपनी पत्नी कनिका बेनीवाल को मैदान में उतारा है। यहां उनका मुकाबला भाजपा के रेवत राम डागा व कांग्रेस की रतन चौधरी से होगा। हनुमान बेनीवाल ने 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के रेवत राम डागा को महज 2059 वोटो से हराया था। विधानसभा उपचुनाव में यदि हनुमान बेनीवाल की पत्नी चुनाव हार जाती है तो उनकी पार्टी का विधानसभा में प्रतिनिधित्व तो समाप्त होगा ही साथ ही उनका प्रदेश की राजनीति में प्रभाव भी काम हो जायेगा। इसलिए हनुमान बेनीवाल के लिए उपचुनाव में करो व मारो वाली स्थिति बनी हुई है।आदिवासी बहुल चौरासी विधानसभा सीट पर पिछले विधानसभा चुनाव में आप पार्टी के अध्यक्ष राजकुमार रोत 69166 वोटो से चुनाव जीते थे। उनके बांसवाड़ा–डूंगरपुर से सांसद बनने के चलते इस्तीफा देने से खाली हुई चौरासी सीट पर उपचुनाव हो रहा है। आदिवासी बेल्ट में बाप पार्टी का प्रभाव लगातार प्रभाव बढ़ रहा है। पिछले विधानसभा चुनाव में बाप पार्टी के तीन विधायक जीते थे। चौरासी सीट पर कांग्रेस व भाजपा ने भी इस बार नए प्रत्याशियों को मौका दिया है। वही बाप पार्टी का बागी बदामीलाल ताबियाड़ भी चुनाव मैदान में खड़ा है। उनकी पत्नी शर्मिला अभी चिखली पंचायत समिति की प्रधान है। बदामीलाल को पार्टी अध्यक्ष राजकुमार रोत मैदान से हटाने में असफल रहे हैं। सांसद रोत के लिए चौरासी सीट उनकी प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई है। क्योंकि वह वहां से लगातार दो बार विधायक रह चुके हैं। यदि चौरासी से उनकी पार्टी का प्रत्याशी चुनाव हारता है तो उनके बढ़ते प्रभाव को झटका लगेगा।

राजस्थान की सात में से चार विधानसभा सीटों झुंझुनू, देवली–उनियारा, खींवसर में तिकोना व चौरासी में चौकोना मुकाबला होने जा रहा है। झुंझुनू में पूर्व मंत्री राजेंद्र गुढ़ा के मैदान में उतरने से मुकाबला तिकोना हो गया।

पटाखों के चलते हिंसा और हत्या

इस दीपावली पर पटाखे के कारण देश में जो कुछ हुआ हैं, उनमें से ज्यादातर में हिन्दू बनाम हिन्दू का मामला है। और निष्कर्ष है कि पटाखों के चलते हिंसा और हत्या के ज्यादातर मामलों में, लड़ाई हिन्दू बनाम हिन्दू की है। कोई 8वीं पास विद्यार्थी भी इंटरनेट पर ये सारे सबूत देख सकता है। यानी कि पटाखों ने हिन्दुओं को आपस में ही बँटने पर मजबूर कर दिया है। हालांकि यह भी सच है कि धर्म विरोधी का तमगा मिल जाने के डर से अधिकाँश लोग इस सबको चुपचाप सह लेते हैं।दूसरी बात यह है कि पटाखे के विरोध में गाँव–गाँव और मोहल्ले–मोहल्ले में हो रहे भयंकर विरोध और हिंसा के तमाम मामले थाने और मीडिया तक पहुँचते ही नहीं हैं। धर्म, परंपरा और उत्सव की आड़ में गुंडागर्दी और अराजकता है। और यह देशहित में नहीं है।कड़वा सच है कि दीपावली का पटाखा हिन्दुओं को हिन्दुओं से लड़ाने का माध्यम बन गया है। उत्तर प्रदेश सहित पूरे देश में पुलिस और प्रशासन की जानकारी में ऐसे सैकड़ों मामले हैं जहाँ पर पर्व की आड़ में पटाखे का इस्तेमाल अपने दुश्मनों को सताने और हत्या करने में किया जा रहा है। पटाखे के कारण खुशियों का त्योहार नफरत, हिंसा और मातम का त्योहार बन गया है।विदेशों में हरियाली का प्रतिशत बहुत ज्यादा होता है और यह हरियाली, आतिशबाजी के शोर और धुंए को सोख लेती है। साथ ही विदेशों में पटाखा फोड़ने के लिए एक बड़ा मैदान होता है जहाँ फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी तैयार रहती है। भारत देश में भी बड़े लोगों के घर के पास आप पटाखा नहीं फोड़ सकते, मगर आम आदमी के साथ,आये दिन कभी धर्म की आड़ में डी.जे. तो कभी पटाखे की ऐसी गुंडागर्दी होती ही रहती है और श्धार्मिकश्य मामला बताकर पुलिस पल्ला झाड़ लेती है।फिर पुलिस के मूकदर्शक बनने के बाद अपनी और अपने परिवार के सदस्य की जान बचाने के लिए जो भी आदमी, जानलेवा पटाखे का विरोध करता है, उसको धर्म विरोधी कह कर मार दिया जाता है मानो कि पटाखे से लोहवान, गुग्गुलु और चंदन की दिव्य महक आती हो। यह गुंडागर्दी बंद होनी चाहिए।इसलिए सरकार को चाहिए कि वह आम जनता के साथ ही कोर्ट को बताए कि जिस आतिशबाजी के कारण हर साल अरबों रुपये की संपत्ति आग में स्वाहा हो जाती है, जिस आतिशबाजी के चलते बेजुबान जानवरों की जान खतरे में पड़ जाती है, जिस आतिशबाजी के कारण देश भर के करोड़ों अस्थमा मरीज तड़पड़ाते है जिस पटाखे के कारण लोग अपनी आँख की रोशनी और सुनने की क्षमता खो दे रहे है जिस पटाखे के शोर और धुएं को रोकने की लड़ाई में लोग आपस में मर–कट कर पुलिस और कोर्ट का बोझ बढ़ा रहे हों, वह पटाखा किसी भी धर्म और परम्परा का हिस्सा नहीं हो सकता।पटाखे पूरी तरह से बंद हो। ना तो शादी–विवाह में, ना दीपावली–होली पर, ना ईद–बारावफात में और ना ही क्रिसमस–नए साल पर।

फिल्मी दुनिया/सेहत

बाक्स आफिस पर भूल भुलैया 3 का बाक्स आफिस पर कब्जा, पांचवें दिन कमाए इतने करोड़ रुपये

कार्तिक आर्यन और तृप्ति डिमरी की फिल्म भूल भुलैया 3 को दिवाली के मौके पर यानी 1 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था।इस फिल्म ने सिनेमाघरों में दस्तक देते ही बॉक्स ऑफिस पर कब्जा कर लिया है। इस हॉरर कॉमेडी फिल्म को देखने के लिए सिनेमाघरों में दर्शकों की भीड़ उमड़ रही है।शुरुआती तीन दिन टिकट खिड़की पर खूब नोट छापने के बाद अब कामकाजी दिनों फिल्म की दैनिक कमाई की रफ्तार धीमी हो गई है।

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, भूल भुलैया 3 ने पांचवें दिन यानी मंगलवार को 13 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 137 करोड़ रुपये हो गया है।भूल भुलैया 3 ने 35.5 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर बेहतरीन शुरुआत की थी, वहीं दूसरे दिन यह फिल्म 37 करोड़ रुपये का कारोबार करने में सफल रही है।तीसरे दिन इस फिल्म ने 33.5 करोड़ रुपये और चौथे दिन 17.50 करोड़ रुपये कमाए। भूल भुलैया 3 के निर्देशक अनीस बाज्मी हैं। छोटे पंडित के रूप में राजपाल यादव, पंडिताइन के रोल में अश्विनी कालसेकर और बड़े पंडित के किरदार में संजय मिश्रा की तिकड़ी ने दर्शकों का जमकर मनोरंजन कर रही है।

रजनीकांत–बिग बी की फैंस को मिला बड़ा तोहफा, वेट्टैयन की ओटीटी रिलीज डेट से उठा पर्दा

रजनीकांत और अमिताभ बच्चन अभिनीत वेट्टैयन टीजे ज्ञानवेल द्वारा लिखित और निर्देशित है। वेट्टैयन 10 अक्तूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। अब वह ओटीटी पर धमाल मचाने के लिए पूरी तरह से तैयार है। जो लोग सिनेमाघरों में फिल्म को देखने से चूक गए हैं, अब वे घर बैठे फिल्म का लुत्फ उठा सकते हैं। चलिए आपको बताते हैं कि फिल्म कब और कहां रिलीज होने वाली है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने वेट्टैयन की ओटीटी रिलीज की घोषणा की है। फिल्म का पोस्टर जारी करते हुए इसकी ओटीटी प्रीमियर की रिलीज की तारीख से पर्दा उठाया गया है। प्राइम वीडियो इंडिया ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर वेट्टैयन का एक पोस्टर साझा किया।पोस्टर में रजनीकांत, अमिताभ बच्चन, फहद फासिल और राणा दग्गुबाती हैं। पोस्टर साझा करते हुए उन्होंने घोषणा की कि एक्शन–ड्रामा फिल्म 8 नवंबर से स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगी। पोस्ट साझा करते हुए कैप्शन में लिखा गया, वेट्टैयन के आगमन की तारीख तय हो गई है। प्राइम, वीडियो पर वेट्टैयन देखें 8 नवंबर को। फिल्म के कलाकारों की बात करें तो इसमें रजनीकांत, अमिताभ बच्चन, फहद फासिल और राणा दग्गुबाती के अलावा मंजू वारियर, किशोर, रितिका सिंह, दुशरा विजयन, जीएम सुंदर, अबिरामी, रोहिणी, राव रमेश, रमेश थिलक, रक्षण और अन्य भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं। फिल्म में रजनीकांत ने अथियन की भूमिका निभाई है। वह एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी है, जो एक शिक्षक की हत्या की जांच करते समय मुठभेड़ के दौरान गलती से एक निर्दोष व्यक्ति को गोली मार देता है। वेट्टैयन को टीजे ज्ञानवेल ने लिखा और निर्देशित किया है। संगीत अनिरुद्ध रविचंदर ने दिया है। गाने मनासिलायो और हंटर वंतार चार्टबस्टर बन गए हैं। लाइका

वजन घटाने के लिए कीटो डाइट है कारगर, इसका पालन करते समय खाएं ये 5 स्नैक्स

इन दिनों लोग वजन को नियंत्रित रखने के लिए कीटो डाइट का पालन करते हैं, जो असल में फायदेमंद होती है। यह एक लोकप्रिय डाइट है, जो उच्च वसा और कम कार्ब वाले खाद्य पदार्थों पर केंद्रित होती है।कार्ब को घटाने से शरीर कीटोसिस की स्थिति में आ जाता है, जिसके कारण वजन घटाने में मदद मिलती है। आप इस डाइट का पालन करते समय ये 5 स्नैक्स खा सकते हैं।

एवोकाडो

आप अपने कीटोसिस के स्तर को बनाए रखने और ऊर्जा को बढ़ाने के लिए एवोकाडो खा सकते हैं। इसमें अच्छी मात्रा में स्वस्थ मोनोसैचुरेटेड वसा और फाइबर मौजूद होता है, जिससे आपका पेट लंबे समय तक भरा हुआ रह सकता है।इसमें पोटैशियम, विटामिन के और विटामिन ई भी पाए जाते हैं, जिनके जरिए तृप्ति की भावना बढ़ जाती है। आप एवोकाडो को छीलकर टुकड़ों में काटकर खा सकते हैं या इससे गुआकामोल बना सकते हैं।

जुकीनी के चिप्स

अगर आपको स्नैक के तौर पर चिप्स खाना पसंद है, तो आप आलू के चिप्स के बजाय जुकीनी के चिप्स खा सकते हैं।इनमें कार्ब और कैलोरी की मात्रा कम होती है, जिसके कारण आप इन्हें कीटो डाइट का हिस्सा बना सकते हैं। जुकीनी के चिप्स बनाने के लिए सबसे पहले जुकीनी को गोल और पतले आकार में काट लें।अब इनपर नमक, जैतून का तेल और काली मिर्च लगाकर इन्हें बेक कर लें।गुआकामोल के साथ खीरा

कीटो डाइट का पालन कर रहे लोग स्नैक के तौर पर खीरे के टुकड़े और गुआकामोल खा सकते हैं।खीरे में कार्ब कम होते हैं और पानी की मात्रा अधिक होती है। इसके जरिए आप हाइड्रेटेड रह सकते हैं और आपको वजन घटाने

क्रिकेट फैंस के लिए बुरी खबर, एशियन गेम्स 2026 में शामिल नहीं होगा क्रिकेट, जानें पूरी जानकारी

एशियन गेम्स 2026 जापान में होने हैं। जापान के हेड ऑफ क्रिकेट ऑपरेशंस एलन कर ने बताया है कि एशियाड 2026 में क्रिकेट को शामिल नहीं किया गया है। एलन कर से सवाल किया गया था कि क्या 2026 एशियाड में नागोया में मौजूदा बेसबॉल स्टेडियम का इस्तेमाल क्रिकेट मैच के लिए किया जाएगा।

भारतीय क्रिकेट फैंस कुछ समय पहले बड़ी खुशखबरी आई जब देश के सबसे लोकप्रिय खेल को 2028 के लॉस एंजेलिस ओलंपिक खेलों में शामिल किया गया था। ये पहला मौका है जब ओलंपिक खेलों में क्रिकेट को शामिल किया गया। इस खुशखबरी के साथ फैंस के लिए बुरी खबर भी है। दरअसल, एशियन गेम्स 2026 में क्रिकेट को शामिल नहीं किया गया है। 2026 के एशियन गेम्स जापान में होने हैं। जापान के हेड ऑफ क्रिकेट ऑपरेशंस एलन कर ने बताया है कि एशियाड 2026 में क्रिकेट को शामिल नहीं किया गया है। एलन कर से सवाल किया गया था कि क्या 2026 एशियाड में नागोया में मौजूदा बेसबॉल स्टेडियम का इस्तेमाल क्रिकेट मैच के लिए किया जाएगा। कर ने एमर्जंग क्रिकेट से कर ने कहा कि, देखों अगर क्रिकेट को शामिल किया जाता है तो ये शानदार होगा। हालांकि हमारी आयोजन समिति से बात हुई है जो कि साफ कर चुके हैं कि ऐसा नहीं है। एशियाड में 41 खेल होंगे लेकिन क्रिकेट अभी उस स्तर पर नहीं है। जब तक वह हमें कुछ और न कहे हम कोई प्लान तैयार नहीं करेंगे। हांगझू में हुए एशियन गेम्स में भारत की महिला और पुरुष क्रिकेट टीम ने गोल्ड मेडल जीता था। ये पहला मौका था जब पुरुष टीम एशियाड में खेलती नजर आई थी।

इस पाकिस्तानी क्रिकेटर ने लिया संन्यास, टी20 क्रिकेट में झटक चुका है 25 विकेट

उस्मान ने अपने संन्यास की घोषणा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए दी। उस्मान कादिर पाकिस्तान के लीजेंड्री स्पिनर अब्दुल कादिर के बेटे हैं। उन्होंने पाकिस्तान के लिए 25 टी20 और 1 वनडे मुकाबला खेला है।पाकिस्तान के 31 वर्षीय लेग स्पिनर उस्मान कादिर ने क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। उस्मान ने अपने संन्यास की घोषणा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए दी। उस्मान कादिर पाकिस्तान के लीजेंड्री स्पिनर अब्दुल कादिर के बेटे हैं। उन्होंने पाकिस्तान के लिए 25 टी20 और 1 वनडे मुकाबला खेला है। 25 टी20 में उन्होंने कुल 31 विकेट अपनेन नाम किए हैं। पाकिस्तान के लिए उनका आखिरी मैच 7 अक्टूबर 2023 को बांग्लादेश के खिलाफ था। उस्मान कादिर ने अपने सोशल मीडिया पर संन्यास का ऐलान करते हुए लिखा कि, मैं आज पाकिस्तान क्रिकेट से अपने संन्यास की घोषणा कर रहा हूं, और इस अविश्वसनीय याक्षा पर विचार करते हुए मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं। अपने देश का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान रहा है और मैं अपने कोचों और साथी खिलाड़ियों के लिए आभारी हूं जो हर कदम पर मेरे साथ खड़े रहे। वहीं हाल ही में उस्मान ने राष्ट्रीय टीम से बाहर किए जाने के लिए पूर्व पीसीबी तकनीकी निदेशक मोम्मद हफीज को दोषी ठहराया। एक स्थानीय यूट्यूब चौनल पर बोलते हुए, उस्मान ने दावा किया है कि पूर्व टी20 कप्तान शाहीन अफरीदी ने घरेलू क्रिकेट में उनके हालिया प्रदर्शन के आधार पर उन्हें जनवरी में न्यूजीलैंड सीरीज के लिए चयन का आश्वासन दिया था। उन्होंने हफीज पर उनके चयन के खिलाफ वकालत करने का आरोप लगाया और दावा किया कि इस हस्तक्षेप ने उनके करियर को प्रभावित किया है।

पंत को दिल्ली कैपिटल्स करेगी रिटैन ? पार्थ जिंदल ने दिया ये जवाब

ऋषभ पंत आईपीएल 2025 में किसी और फ्रेंचाइजी टीम के लिए खेल सकते हैं। पंत दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान हैं। लेकिन अब दिल्ली कैपिटल्स के ओ–ओनर पार्थ जिंदल ने साफ कर दिया है पंत आईपीएल 2025 में भी दिल्ली कैपिटल्स का ही हिस्सा रहेंगे और उनकी फ्रेंचाइजी टीम उनको रिटेन करेगी।आईपीएल 2025 का इंतजार फैंस को अभी से है। इसी साल के अंत में आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन होना है। वहीं मेगा ऑक्शन से पहले सभी फ्रेंचाइजी टीमों को अपने रिटेन्ड किए गए खिलाड़ियों की लिस्ट बीसीसीआई को सौंपनी है। खिलाड़ियों के रिटेंशन को लेकर बीसीसीआई ने नियमों का ऐलान कर दिया है। वहीं कहा जा रहा है कि, ऋषभ पंत आईपीएल 2025 में किसी और फ्रेंचाइजी टीम के लिए खेल सकते हैं। पंत दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान हैं। लेकिन अब दिल्ली कैपिटल्स के ओ–ओनर पार्थ जिंदल ने साफ कर दिया है पंत आईपीएल 2025 में भी दिल्ली कैपिटल्स का ही हिस्सा रहेंगे और उनकी फ्रेंचाइजी टीम उनको रिटेन करेगी। आईएनएस को दिए इंटरव्यू में पार्थ ने कहा कि, हां हम पंत को जरूर रिटेन करेंगे। हमारी टीम में कुछ बहुत ही शानदार खिलाड़ी हैं। अभी रिटेंशन के नियम हमारे सामने आए ही हैं, तो जीएमआर के साथ और हमारे डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट सौरव गांगुली के साथ डिसकशन के बाद हम कोई फैसला लेंगे। पंत को पक्का ही रिटेन किया जाएगा। हमारे पास अक्षर पटेल हैं, जो बहुत ही बेहतरीन खिलाड़ी हैं।

मेहदी हसन मिराज को रोहित शर्मा से पंगा लेना पड़ा महंगा, ऐसे मिला मुंहतोड़ जवाब

बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में भारत ने क्लीनस्वीप किया। भारत ने सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच 1 अक्टूबर को अपने नाम कर सीरीज पर कब्जा जमाया था। मैच के चौथे और पांचवें दिन कुछ ऐसा हुआ था, जिस पर ज्यादा लोगों की नजर नहीं गई थी। बता दें कि, टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा को मैदान पर विरोधी टीम के खिलाड़ियों से पंगा लेते हुए आपने कम ही देखा होगा।भारत ने बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में क्लीनस्वीप किया। भारत ने सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच 1 अक्टूबर को अपने नाम कर सीरीज पर कब्जा जमाया था। मैच के चौथे और पांचवें दिन कुछ ऐसा हुआ था, जिस पर ज्यादा लोगों की नजर नहीं गई थी। बता दें कि, टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा को मैदान पर विरोधी टीम के खिलाड़ियों से पंगा लेते हुए आपने कम ही देखा होगा, लेकिन अगर कोई पंगा ले तो ऐसे में रोहित उसे जल्दी छोड़ते भी नहीं है। ऐसा ही कुछ भारत और बांग्लादेश के बीच भी देखने को मिला। बता दें कि, इंडिया वर्सेस बांग्लादेश टेस्ट मैच ड्रॉ की ओर बढ़ रहा था, पहले दिन महज 35 ओवर का

क्या है इजरायल का पुतिन वाला प्लान ? दक्षिणी लेबनान के लगभग 30 गावों को इलाका छोड़ जाने का अल्टीमेटम

ईरान मिसाइल बरसा रहा है और इजरायल उन हमलों का मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी में है। ईरान ने इजरायल पर 200 मिसाइलें दागी तो हिजबुल्लाह की ओर से भी इजरायल पर लगातार हमले हो रहे हैं। इजरायल ने हमास की पूरी तरह से कमर तोड़ दी है और अब वो हिजबुल्ला के खिलाफ ऑपरेशन को अंजाम देने में लगा हुआ है। ईरान के हमले के बाद इजरायल आर पार के मूड में नजर आ रहा है। हिजबुल्लाह को मिटाने के लिए इजरायली सैनिक लेबनान की सीमा में दाखिल भी हो चुके हैं। ग्राइंड ऑपरेशन में इस वक्त भीषण युद्ध जारी है। इन सब के बीच कतर की ओर और यूएन की ओर से शांति और समझौते की पहल की जा रही है। हालांकि दोनों देशों की बयाबाजी के बाद ऐसा लगता नहीं है कि ये पेशकश पर कोई अमल करेगा और ये सफल होगा। ईरान और इजरायल के बीच की जंग मीडिल ईस्ट में छिड़ी है। ईरान मिसाइल बरसा रहा है और इजरायल उन हमलों का मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी में है। ईरान ने इजरायल पर 200 मिसाइलें दागी तो हिजबुल्लाह की ओर से भी इजरायल पर लगातार हमले हो रहे हैं।इजरायल ने कह दिया है कि पलटवार जोरदार होगा। ऐसा होगा कि दुनिया याद रखेगी।इसके साथ ही कहा जा रहा है कि इजरायल लेबनान में पुतिन वाला प्लान अपनाने जा रहा है। दरअसल, रूस यूक्रेन वॉर के बीच मॉस्को ने कीव को कमजोर करने के लिए यूक्रेनी शहर डोनबास को उससे अलग करने का प्लान बनाया था। जिसमें पुतिन कामयाब भी हुए थे। आगे चलकर पुतिन ने डोनाबास के दो इलाके डोनेत्सक और लुहांस्क को एक देश के तौर पर मान्यता दे दी थी। डोनाबास के अलग होने से न केवल यूक्रेन की अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा बल्कि उसके हाथ से युद्ध भी निकल गया। अब ऐसी ही रणनीति इजरायल भी लेबनान के खिलाफ अपना रहा है। इजरायल ने लेबनान से उसके दक्षिणी भाग को अलग करने की ठान ली है। बेंजामिन नेतन्याहू जानते हैं कि नसरल्लाह की हत्या के बाद हिजबुल्लाह के पास कोई नेतृत्व नहीं है। ऐसे में नेतन्याहू इसका पूरा फायदा उठाना चाहते हैं। दक्षिणी लेबनान हिजबुल्लाह के लिए बेहद अहम माना जाता है। यहां पर मौजूद दायफ शहर उसके लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इसे हिजबुल्लाह का लाइफ लाइन भी कहा जाता है। बेरूत, त्रिपोली और सिडेन के बाद दायर लेबनान का चौथा बड़ा शहर है। दायर का लेबनान से संपर्क टूटने के बाद यूक्रेन की तरह हिजबुल्लाह की कमर टूट जाएगी। ये नीति पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ अपनाई थी और अब वही काम इजरायल लेबनान के साथ कर रहा है।

इजरायल के साथ युद्धविराम के लिए तैयार हो गया था नसरल्लाह, लेबनान के मंत्री का दावा,

हबीब ने कहा कि हम पूरी तरह सहमत थे। लेबनान युद्धविराम के लिए सहमत हुआ लेकिन (बाद में) हिजबुल्लाह के साथ परामर्श किया। (लेबनानी सदन) के अध्यक्ष नबीह बेरी ने हिज्बुल्लाह के साथ परामर्श किया और हमने अमेरिकियों और फ्रांसीसियों को इस बारे में सूचित किया कि क्या हुआ था। उन्होंने हमें बताया कि नेतन्याहू उस बयान पर भी सहमत थे जो दोनों (अमेरिकी और फ्रांसीसी) राष्ट्रपतियों द्वारा जारी किया गया था। लेबनान के विदेश मंत्री अब्दुल्ला बौ हबीब ने सीएनएन को बताया कि बेरूत में इजरायली हवाई हमले में मारे जाने से कुछ दिन पहले ही हिजबुल्लाह प्रमुख हसन नसरल्लाह ने इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ 21 दिनों के युद्धविराम पर सहमति जताई थी। पिछले महीने संयुक्त राष्ट्र महासभा से इतर मुलाकात के बाद बाइडेन, मैक्रों और अन्य सहयोगियों द्वारा अस्थायी युद्धविराम का आह्वान किया गया था। सितंबर के मध्य में समूह द्वारा इस्तेमाल किए गए पेजर और वॉकी–टॉकी के कई विस्फोटों के लिए हिजबुल्लाह द्वारा इजराइल को दोषी ठहराए जाने के बाद युद्धविराम की मांग उठी। हबीब ने कहा कि हम पूरी तरह सहमत थे। लेबनान युद्धविराम के लिए सहमत हुआ लेकिन (बाद में) हिजबुल्लाह के साथ परामर्श किया। (लेबनानी सदन) के अध्यक्ष नबीह बेरी ने हिजबुल्लाह के साथ परामर्श किया और हमने अमेरिकियों और फ्रांसीसियों को इस बारे में सूचित किया कि क्या हुआ था। उन्होंने हमें बताया कि नेतन्याहू उस बयान पर भी सहमत थे जो दोनों (अमेरिकी और फ्रांसीसी) राष्ट्रपतियों द्वारा जारी किया गया था। लेबनानी विदेश मंत्री के अनुसार, व्हाइट हाउस के वरिष्ठ सलाहकार अमोस होचस्टीन युद्धविराम समझौते पर बातचीत करने के लिए लेबनान जाने वाले थे। हबीब ने कहा कि उन्होंने हमें बताया कि श्री नेतन्याहू इस पर सहमत हैं और इसलिए हमें इस पर हिजबुल्लाह की सहमति भी मिली और आप जानते हैं कि तब से क्या हुआ।

पश्चिम एशिया में तनाव के बीच जयशंकर–ब्लिंकन की मुलाकात, क्या शांति के प्रयासों को मिलेगी सफलता ?

पीएम नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार में आने के बाद अपनी पहली यात्रा पर वॉशिंगटन पहुंच कर जयशंकर ने अमेरिकी विदेश विभाग के प्रमुख एंटनी ब्लिंकन से मुलाकात की। विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनके अमेरिकी समकक्ष एंटनी ब्लिंकन ने वॉशिंगटन डीसी में मुलाकात की। इस बैठक में दोनों देशों ने वेस्ट एशिया की स्थिति, भारतीय उपमहाद्वीप, इंडो– पैसिफिक व यूक्रेन में हाल के घटनाक्रमों पर चर्चा करते हुए क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए साथ मिलकर काम करने पर कमिटमेंट जाहिर की है। पीएम नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार में आने के बाद अपनी पहली यात्रा पर वॉशिंगटन पहुंच कर जयशंकर ने अमेरिकी विदेश विभाग के प्रमुख एंटनी ब्लिंकन से मुलाकात की। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के हेडक्वार्टर श्फॉगी बॉटमश में बैठक के बाद ब्लिंकन ने कहा कि श्अमेरिका और भारत क्षेत्रीय और ग्लोबल चुनौतियों से निपटने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर और मैंने जलवायु संकट पर हमारे निरंतर सहयोग और रीजनल सिक्योरिटी को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा की। वहीं, जयशंकर ने कहा कि वॉशिंगटन में ब्लिंकन के साथ बातचीत करके बहुत खुशी हुई। हमने डेलावेयर द्विपक्षीय और क्वॉड बैठकों पर चर्चा की। हमारी बातचीत में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने, वेस्ट एशिया की स्थिति, भारतीय उपमहाद्वीप और इंडो– पैसिफिक व यूक्रेन में हाल के घटनाक्रम शामिल थे।उन्होंने पीएम मोदी की अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ हालिया बाइलैटरल बैठक का जिक्र किया। अमेरिका के राष्ट्रपति ने 21 सितंबर को द्विपक्षीय बैठक के लिए अपने यूक्रेन के लिए न्यायपूर्ण और स्थायी शांति के महत्व को दोहराया। जयशंकर ने डेलावेयर में प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के बीच शानदार बैठक और सार्थक क्वाड बैठक के लिए ब्लिंकन को धन्यवाद दिया इससे पहले दिन में जयशंकर ने शीर्ष अमेरिकी 'थिंक–टैंक' कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस में एक चर्चा में भाग लिया।

पाकिस्तान में इस वर्ष पोलियो के 26 मामले सामने आए

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की विशेष प्रतिनिधि आयशा रजा फारूक ने नये मामलों को पाकिस्तानी बच्चों के लिए ''चिंताजनक'' बताया और कहा कि उन्हें अभी भी एक ऐसी बीमारी से खतरा है जिससे आसानी से बचा जा सकता है।पाकिस्तान के सिंध प्रांत में पोलियो के दो नये मामले सामने आने के बाद इस साल देश में इस बीमारी के मामलों की संख्या बढ़कर 26 हो गई है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी।सिंध प्रांत के कराची पूर्व और सुजावल जिलों में इन नये मामलों की पुष्टि हुई है। इन मामलों के सामने आने के बाद देश में पोलियो वायरस के उन्मूलन के प्रयासों को झटका लगा है।राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान में पोलियो उन्मूलन के लिए क्षेत्रीयप्रयोगशाला द्वारा जारी एक बयान में कहा गया, ''कराची पूर्व और सुजावल से इस साल का यह पहला मामला है, जहां पर्यावरणीय नमूनों में हाल के महीनों में पोलियो वायरस की मौजूदगी देखी गई है। इससे पता चलता है कि यह समुदायों में फैल रहा है और बच्चों के स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा पैदा कर रहा है।''पोलियो उन्मूलन के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की विशेष प्रतिनिधि आयशा रजा फारूक ने नये मामलों को पाकिस्तानी बच्चों के लिए ''चिंताजनक'' बताया और कहा कि उन्हें अभी भी एक ऐसी बीमारी से खतरा है जिससे आसानी से बचा जा सकता है।

देश में घुसने नहीं देंगे... यूएन के जनरल सेक्रेटरी गुटेरेस की एंट्री इजरायल ने क्यों की बैन

संयुक्त राष्ट्र ने विश्व निकाय के महासचिव एंतोनियो गुतारेस के इजराइल में प्रवेश पर प्रतिबंध को उसके विदेश मंत्री की राजनीतिक बयानबाजी बताया और कहा कि संयुक्त राष्ट्र इजराइल के साथ संपर्क बनाए रखेगा क्योंकि ऐसा करना ही पड़ेगा। इजरायल के विदेश मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस के इस्राइल में घुसने पर रोक लगाई जा रही है। उन्हें अवांछित व्यक्ति घोषित किया गया है। गुतारेस ने बमबारी के बाद कहा था, श्मैं संघर्ष बढ़ने की निंदा करता हूं। इसे रोकना होगा। निश्चित रूप से युद्ध विराम किए जाने की जरूरत है। इस्राइल ने इसे नाकाफी माना है। वहीं दूसरी तरफ संयुक्त राष्ट्र ने विश्व निकाय के महासचिव एंतोनियो गुतारेस के इजराइल में प्रवेश पर प्रतिबंध को उसके विदेश मंत्री की राजनीतिक बयानबाजी बताया और कहा कि संयुक्त राष्ट्र इजराइल के साथ संपर्क बनाए रखेगा क्योंकि ऐसा करना ही पड़ेगा।संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा कि इजराइल के विदेश मंत्री इजराइल कैट्ज द्वारा संयुक्त राष्ट्र प्रमुख को अवांछित व्यक्ति कहना भी इजरायल सरकार की ओर से संयुक्त राष्ट्र कर्मचारियों पर एक और हमला है। संयुक्त राष्ट्र पर पक्षपात और यहूदी–विरोधी होने के इजराइल के आरोप दशकों पुराने हैं, लेकिन देश पर सात अक्टूबर को हमास के हमलों के बाद से यह दरार और बढ़ गई है। इस हमले में लगभग 1,200 लोग मारे गए और गाजा में युद्ध शुरू हो गया। इजरायल के लेबनान में ईरान समर्थित चरमपंथी समूह हिजबुल्ला के खिलाफ हमले और इजरायल पर ईरानी मिसाइल हमले ने पश्चिम एशिया को संपूर्ण युद्ध के कगार पर खड़ा कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पश्चिम एशिया पर एक अमरीकी बैठक की। गुतारेस ने बैठक में जाने से पहले प्रतिबंध के बारे में पूछे गए प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने बैठक में जैसे को तैसा वाली हिंसा में वृद्धि को रोकने की मांग की। कैट्ज ने गुतारेस पर इजराइल के प्रति पक्षपातपूर्ण होने का आरोप लगाया और दावा किया कि संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने कभी भी हमास के हमलों और उसके लड़ाकों द्वारा की गई यौन हिंसा की निंदा नहीं की।

पाकिस्तान में बच्चियों को स्टेज पर देख भाग उठा जाकिर नाइक,

जाकिर नाइक के पाकिस्तान के कई शहरों में कार्यक्रम भी रखे गए। भारत का भगौड़ा पाकिस्तान का दुलारा बन बैठा है। उसने कहा कि मुझे बेहद खुशी हो रही है कि मेरा बरसों का ख्वाब पूरा हुआ। आज मैं पाकिस्तान की सरजमीं पर हूं और अल्लाह ने मेरी बरसों की ख्वाहिश पूरी हुई। भारत का मोस्ट वांटेड जाकिर नाइक पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के दौरे पर नजर आया। पाकिस्तान में उसे इतना वीआईपी ट्रीटमेंट दिया गया कि वहां मंत्रियों में उससे मिलने की भी होड़ लग गई है। इतना ही नहीं भारत के दुश्मन जाकिर से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने भी मुलाकात की और गर्मजोशी के साथ जब मुलाकात हुई उसकी तस्वीरें भी सामने आई। जाकिर नाइक ने कहा कि पाकिस्तान आना उनका सपना था। जाकिर नाइक के पाकिस्तान के कई शहरों में कार्यक्रम भी रखे गए। भारत का भगौड़ा पाकिस्तान का दुलारा बन बैठा है। उसने कहा कि मुझे बेहद खुशी हो रही है कि मेरा बरसों का ख्वाब पूरा हुआ। आज मैं पाकिस्तान की सरजमीं पर हूं और अल्लाह ने मेरी बरसों की ख्वाहिश पूरी हुई। पाकिस्तान भारत के दुश्मन की ऐसी खातिरदारी कर रहा है मानों कोई बहुत बड़ा शख्स उसके देश पहुंच गया है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ तो मानो जाकिर से मिलकर फूले नहीं समा रहे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में आपका स्वागत है। लोग आपकी आवाज और उपदेश को सुनने का इंतजार कर रहे हैं। आपका पाकिस्तान में होना हमारे लिए खुसी की बात है। जाकिर की तारीफ के कसीदे यही खत्म नहीं होते। शहबाज ने तो मानो खुद को पूरी दुनिया के मुसलमानों का नुमाइंदा मान लिया हो। जहरीले जाकिर को ये तक कह दिया कि दुनियाभर के मुसलमान उससे बहुत खुश हैं। शहबाज ने कहा कि दीन और इस्लाम के लिए आपका योगदान शानदार रहा है। मुस्लिम वर्ल्ड आपसे बहुत खुश है। जाकिर नाइक को भी यकीन नहीं हो पा रहा था कि आखिर उसकी इतनी खातिरदारी क्यों की जा रही है। बदले में उसने भी कह दिया कि उसका पाकिस्तान आना बरसों का सपना था। स्टार ट्रीटमेंट लेते जाकिर का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। दरअसल, जाकिर पाकिस्तान में एक कार्यक्रम में पहुंचा था। जहां अनाथ बच्चियों को अवार्ड दिया जाना था। लेकिन जाकिर नाइक भड़क गया और बिना अवार्ड दिए वहां से चला गया। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में नजर आ रहा है कि स्टेज पर जैसे ही बच्चियां पहुंची जाकिर पीछे से चला गया।

बाद में वो आयोजकों पर भड़कते हुए कहा कि ये इस्लामिक सिद्धांतों के खिलाफ है। उसे बच्चियों को बेटियां कहने पर भी गुस्सा आया। 1992 के बाद जाकिर नाइक की पहली पाकिस्तान यात्रा है।

बंगलादेश ने उठाया बड़ा कदम, अपने राजदूतों को भारत से वापस बुलाया

रहमान 2020 से भारत में बांग्लादेश के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने दोनों पड़ोसी देशों के बीच विशेष रूप से व्यापार, कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग की अवधि का निरीक्षण किया। शेख हसीना के पद से हटने और देश छोड़ने के बाद बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार ने गुरुवार को बड़ा फैसला लिया है। विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने गुरुवार को कहा कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने एक बड़े राजनयिक फेरबदल में भारत के उच्चायुक्त मुस्तफिजुर रहमान सहित पांच दूतों को वापस बुला लिया है। अधिकारी ने बताया कि विदेश मंत्रालय ने ब्रूसेल्स, कैनबरा, लिस्बन, नई दिल्ली में दूतों और न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के स्थायी मिशन को तुरंत राजधानी ढाका लौटने का आदेश दिया। यह कदम बांग्लादेश में राष्ट्रीय चुनाव से पहले उठाया गया है। हालाँकि राजनयिकों को वापस बुलाने के पीछे का कारण स्पष्ट नहीं है। विश्लेषकों के अनुसार सत्ता में फेरबदल के बाद राजनयिक प्राथमिकताओं को फिर से संरेखित करने के अंतरिम सरकार के प्रयासों का हिस्सा हो सकती है। रहमान 2020 से भारत में बांग्लादेश के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने दोनों पड़ोसी देशों के बीच विशेष रूप से व्यापार, कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग की अवधि का निरीक्षण किया। यह कदम ऐसे समय में आया है जब दक्षिण एशियाई देश में कई तरह के बदलाव देखने को मिले हैं। विरोध प्रदर्शनों के बाद शेख हसीना को इस्तीफा देने और भारत भागने के लिए मजबूर होने के बाद मुहम्मद यूनुस ने अंतरिम सरकार के प्रमुख के रूप में पदभार संभाला। हसीना को सत्ता से बेदखल करने वाले छात्र–नेतृत्व वाले आंदोलन के परिणामस्वरूप 700 से अधिक लोग मारे गए, जिससे भारत के साथ संबंध तनावपूर्ण हो गए।यह देश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों के बीच भी आया है। हसीना को हटाए जाने के तुरंत बाद, हिंदुओं और मंदिरों पर हमलों की खबरें सामने आईं। इसके बाद देश में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों पर 5 अगस्त को हसीना के नेतृत्व वाली सरकार के पतन के बाद कम से कम 205 हमले हुए।

मैक्सिको ग्वाटेमाला सीमा के समीप सेना की गोलीबारी में छह प्रवासियों की मौत

ट्रक में सवार अन्य 17 प्रवासियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। उसमें कुल 33 प्रवासी सवार थे। आम तौर पर इसी इलाके से प्रवासियों की तस्करी की जाती है, जिन्हें अक्सर मालवाहक ट्रकों में भरकर ले जाया जाता है। मैक्सिको के ग्वाटेमाला की सीमा के समीप एक ट्रक पर सैनिकों की गोलीबारी में छह प्रवासियों की मौत हो गई। रक्षा विभाग ने बुधवार को यह जानकारी दी। विभाग के एक बयान के अनुसार, सैनिकों ने दावा किया कि जब सोमवार देर रात ट्रक और दो अन्य वाहन दक्षिणी राज्य चियापास में हुइक्सटला शहर के समीप उनके तैनाती स्थल के पास पहुंचे तो उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी। ट्रक मिश्र, नेपाल, क्यूबा, घ्भारत, पाकिस्तान और एक अन्य देश से प्रवासियों को ले जा रहा था, जिस पर दो सैनिकों ने गोलियां चलाईं। सैनिक जब ट्रक के समीप पहुंचे तो उन्होंने चार प्रवासियों को मृत पाया जबकि 12 लोग घायल थे। बाद में घायलों में से दो प्रवासियों की मौत हो गई।ट्रक में सवार अन्य 17 प्रवासियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। उसमें कुल 33 प्रवासी सवार थे।

मंदिर में महिलाओं ने डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया, श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

कौड़ीराम गोरखपुर । कौड़ीराम ब्लॉक के ग्रामसभा सिसायल, बासूडीहा स्थित सिसायलनाथ मंदिर के प्रांगण में मंगलवार को सूर्य उपासना के अवसर पर व्रती महिलाओं ने डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया। यह धार्मिक आयोजन भक्ति भाव से संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों और श्रद्धालुओं की उपस्थिति देखी गई।

अस्ताचलगामी सूर्य की पूजा कर व्रतियों ने की मंगल कामना

कौडीराम गोरखपुर । लोक आस्था का पर्व छठ पूजा कौड़ीराम क्षेत्र मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अस्ताचलगामी सूर्य देवता की व्रती महिलाओं ने पूजा अर्चना की। सर्वोदय किसान इंटर कॉलेज कौड़ीराम के ग्राउंड में लगभग 3 फीट गड्ढा खोदकर छठ की बेदी बनाकर पूजा की गई। इस बार यहां पर छठ पूजा मे व्रतियों की काफी भीड़ जुटी। महिलाएं उत्साह से लबरेज नजर आ रही थीं। बड़ी संख्या में ग्रामीणों और श्रद्धालुओं की उपस्थिति देखी गई। महिलाएं विशेष रूप से बने हाथ मे लिए सुपौली लेकर पोखरे के किनारे पहुंची और सूर्यास्त के समय पारंपरिक विधि से पूजा अर्चना किया। महिलाओं ने सूर्य देव से समृद्धि और सुख–शांति की कामना की। इस अवसर पर विशेष रूप से श्रद्धालु जनों में अत्यधिक श्रद्धा और आस्था का माहौल देखने को मिला। कौड़ीराम में ग्राम प्रधान उमेश पासवान द्वारा व्रती महिलाओं एवं श्रद्धालुओं के लिए मैट, चटाई व डीजे आदि की व्यवस्था की गई थी।

श्री कृष्ण ने कंस के पापों से दिलाई मुक्ति – विद्याधर महराज

गगहा गोरखपुर। गगहा क्षेत्र के पाजूपार गांव में सप्त दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन कांची पीठ, अयोध्या धाम से पधारे पं. विद्याधर भारद्वाज महराज ने कंस वध व रुक्मिणी विवाह के प्रसंगों के साथ संक्षेप में प्रभु श्री राम की मर्यादा का चित्रण किया। उन्होंने ने कहा कि बिना प्रभु श्री राम की मर्यादा को समझे हम प्रभु श्री कृष्ण की लीला नहीं समझ सकते। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम का चरित्र अनुकरणीय है, और प्रभु श्री कृष्ण की लीला दर्शनीय है। पृथ्वी लोक में भगवान विष्णु के अवतरित होने के कई प्रमुख कारण थे। जिसमें एक कंस के अत्याचारों से पृथ्वी वासियों को मुक्ति दिलाना भी था। कंस बाल्यावस्था में ही श्री कृष्ण को अनेकों बार मारने का प्रयास किया लेकिन हर प्रयास भगवान के सामने असफल साबित होता रहा। 11 वर्ष की अल्प आयु में कंस ने अपने प्रमुख अक्रूर के द्वारा मल युद्ध के बहाने कृष्ण व बलराम को मथुरा बुलाकर शक्तिशाली योद्धा और पागल हाथियों से कुचलवाकर मारने का प्रयास भी किया, लेकिन अधार्म के सभी पक्षकार श्री कृष्णा और बलराम के हाथों मारे गए। राक्षसी प्रवृति कंस का वद्ध कर प्रभु ने उसका उद्धार किया। श्री कृष्ण ने अपने माता–पिता वासुदेव व देवकी और महाराज अग्रसेन को कारागार से मुक्त कराने के साथ महाराज अग्रसेन को मथुरा के सिंहासन पर बैठाया। कुछ समय व्यतीत होने पर प्रभु श्री कृष्ण द्वारकाधीश बने और कालांतर में विदर्भ देश के महाराज भीष्म की पुत्री रुक्मणी से इनका विवाह संपन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान लीलावती देवी व पति सूर्यनारायण पाण्डेय तथा उर्मिला देवी व पति देवनारायण पाण्डेय, प्रियकांत पाण्डेय, कृष्णकांत पाण्डेय, प्रवीण पाण्डेय, नवीन पाण्डेय, जितेन्द्र पाण्डेय, चंद्रकांत, विवेक, संजय पाण्डेय, राजीव पाण्डेय, चंद्रशेखर यादव, डाक्टर संकठा पाण्डेय, बड़ी संख्या श्रोतागण श्रद्धालु मौजूद रहे।

गोरखपुर, चित्रकूट और कानपुर में नवनियुक्त जिला अध्यक्षों की घोषणा

गोरखपुर । पत्रकार एकता संघ संस्थापक जुनेद सानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष केडी सिंह और राष्ट्रीय प्रभारी डीपी गुप्ता एडवोकेट की सहमति से उत्तर प्रदेश के तीन प्रमुख जनपदों दृ गोरखपुर, चित्रकूट, और कानपुर के लिए नवनियुक्त जिला अध्यक्षों की घोषणा की गई है। गोरखपुर जिले के लिए जफर अहमद खान को जिला अध्यक्ष, चित्रकूट जिले के लिए प्रेम पटेल को जिला अध्यक्ष और कानपुर जिले के लिए गोविंद तिवारी को जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

पत्रकार एकता संघ ने गोरखपुर मंडल के पदाधिकारियों की नियुक्ति की

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर मंडल में पत्रकार एकता संघ ने नए पदाधिकारियों की नियुक्ति की है। इस कदम से संगठन को और अधिक सशक्त बनाने की उम्मीद जताई जा रही है। अखिलेश कुमार ओझा को मंडल प्रभारी, कन्हैया लाल जायसवाल को मंडल अध्यक्ष और दबीर आलम को मंडल वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया है। इन नियुक्तियों से गोरखपुर मंडल में पत्रकारिता के क्षेत्र में नई दिशा और ऊर्जा की उम्मीद की जा रही है। यह नियुक्ति राष्ट्रीय अध्यक्ष के डी सिंह, राष्ट्रीय प्रभारी डी पी गुप्ता ने प्रदेश उपाध्यक्ष एवं प्रभारी गोरखपुर मंडल शैलेश कुमार श्रीवास्तव

ब्रह्मपुर में छठ पूजा धूमधाम से मनाई गई

राज्यसभा सांसद संगीता यादव व ब्लाक प्रमुख सुमन यादव ने डूबते सूर्य की पूजा अर्चना

ब्रह्मपुर गोरखपुर। झंगहा क्षेत्र में छठ पूजा धूमधाम से मनाई गई व्रती महिलाओं ने डूबते सूरज को अर्घ देकर पूजा अर्चना किया । झंगहा के विश्वनाथपुर में राज्य सभा सांसद संगीता यादव ने छठ व्रत रहकर डूबते सूरज को अर्घ दिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद ने कहा कि छठ पूजा एक आस्था एवं पवित्रता का त्यौहार है जो पूरे देश में धूमधाम से मनाया जा रहा है। विश्वनाथपुर के इमलिया घाट पर ग्राम प्रधान विष्णु मौर्य के देख रेख में साफ सफाई पीने के पानी की व्यवस्था एवं पथ प्रकाश की व्यवस्था की गई। छठ पूजा पर क्षेत्र के राजधानी झंगहा गौरी घाट करही बरही डीहघाट इत्यादि घाटों पर पूजा अर्चना की गयी झंगहा के गौरी घाट पर ग्राम प्रधान सुमित कुमार पटेल के नेतृत्व में गौरी घाट के गोर्रा नदी के तट पर घाटों की साफ सफाई एवं आने जाने वाली व्रती महिलाओं के लिए समुचित व्यवस्था की गई। राजधानी के रंगी घाट एवं मंगलपुर घाट पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अरविंद कुमार सिंह द्वारा समुचित व्यवस्था की गई। ब्लॉक प्रमुख ब्रह्मपुर सुमन यादव अपने गांव न्योढ़ी के पोखरे पर ग्रामवासियों के साथ छठ पूजा में शामिल हुई। भकुरहा नेवढी ग्राम सभा की ग्राम प्रधान संगीता यादव द्वारा छठ घाट पर चारों तरफ लाईट व अन्य की अच्छी व्यवस्थाएं की गई थी। ब्रह्मपुर ब्लॉक के विभिन्न गांवों में डूबते सूर्य के पूजन के साथ छठ पर्व बहुत धूम धाम से मनाया गया। बाबा निंबेश्वर नाथ धाम ब्रहमपुर, नई बाजार, बरगदही, बेलवा, रामपुरा आदि गांव के लोगों ने पूजा अर्चना की। मनु दुबे नीतीश दुबे गजेंद्र गिरी रजनीश गिरी आदि लोगों ने निंबेश्वर नाथ मंदिर पोखरे पर उपस्थित रहकर छठ घाट की व्यवस्था संभाली। कड़ी सुरक्षा हेतु एसडीएम प्रशांत वर्मा, क्षेत्राधिकारी चौरीचौरा अनुराग सिंह, थानाध्यक्ष सूरज सिंह, ब्रह्मपुर चौंकी इंचार्ज अशोक कुमार सिंह, एसआई सोनू कुमार गुप्ता, कांस्टेबल विशाल, कांस्टेबल सीपी यादव कांस्टेबल चन्दन, कांस्टेबल सुप्रिया, कांस्टेबल नंदिनी आदि क्षेत्र में भ्रमणशील रहे।

डूबते सूर्य के पूजन के साथ व्रतियों ने किया छठ पूजा

चौरी चौरा गोरखपुर। चौरी चौरा में छठ व्रत हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है गुरुवार को छठ व्रत के अवसर पर क्षेत्र के भोपा बाजार आम कोल डुमरी खास बिलारी गौनर सहित अन्य गांवों में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।व्रतियों ने डूबते सूर्य के पूजन के साथ छठ व्रत मनाया जा रहा है। क्षेत्र के आमकोल पोखरे छठ व्रतियों की भारी भीड़ रही । स्थानीय प्रशासन द्वारा सुरक्षा के बंदोबस्त किए गए थे। इस अवसर क्षेत्रीय विधायक सरवन निषाद ग्राम प्रधान प्रतिनिधि दिलीप यादव थानाध्यक्ष संजय मिश्रा पोखरे पर सुरक्षा के लिए जमे रहे व्यवस्था मे एस आई अजीत यादव एस आई कृष्णकान्त सिंह कांस्टेबल अतुल यादव विजय महिला कांस्टेबल वैशाली शर्मा अंकिता सिंह सहित तमाम लोग उपस्थित रहे। चौरी चौरा विधायक सरवन निषाद ने आम कोल पोखरे के चारो तरफ फर्श बनवाने की घोषणा जिससे लोगों ने खुशी जताया।

तरकुलहा धाम में व्रतियों ने किया छठ पूजा

चौरी चौरा गोरखपुर। छठ व्रत के अवसर पर तरकुलहा देवी मंदिर के सामने स्थित पोखरे पर बने घाटों पर मां तरकुलहा देवी धाम चौरिटेबल ट्रस्ट एवं व्यापार मंडल के वॉलिंटियर के साथ–साथ स्थानीय पुलिस व्रती महिलाओं की सुरक्षा एवं सेवा में मुस्तैद रहे। शाम के समय व्रती महिलाएं पानी में खड़े होकर ठेकुआ, गन्ना समेत अन्य प्रसाद सामग्री से सूर्यदेव को अर्घ्य दिया और अपने परिवार, संतान, समाज की सुख–शांति समृद्धि के लिए मंगल कामना किया ट्रस्ट एवं व्यापार मंडल द्वारा मंदिर के सामने स्थित पोखर के चारों तरफ रोशनी तथा सुरक्षा की दृष्टि से ड्रोन कैमरा का प्रबंध किया गया है तथा वालंटियर द्वारा पानी में खड़े होकर के व्रती महिलाओं के साथ आए बच्चों पर विशेष ध्यान दिया गया कि कहीं गहरे पानी में न जाय आयोजन में प्रमुख रूप से अमरनाथ जयसवाल हरीश राजभर हिमाचल सनी ऋषि साहनी सोनू पासवान दीपक सिंह अमरजीत पासवान करण वाल्मीकि दयाशंकर पासवान धर्मेंद्र जायसवाल रामू जैसवाल अमित कुमार यादव मोनू मद्धेशिया सूरज राम भाई छोटे मोदनवाल सचिन पासवान बबलू पासवान उपस्थित रहे।

छठ पूजा के उपलक्ष्य में उरुवा मार्केट में उमड़ी भीड़, खरीददारी का दिखा जोश

उरुवा गोरखपुर । उरुवा बाजार में छठ पूजा के अवसर पर लोगों का हुजूम देखने को मिला। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ बाजार में उमड़ पड़ी और चारों ओर रौनक का माहौल बन गया। इस मौके पर महिलाएं और पुरुष, छठ पूजा के लिए आवश्यक सामग्रियों की खरीदारी करने के लिए खासे उत्साहित दिखे। पूजा के दौरान इस्तेमाल होने वाली सूप, टोकरी, फल, गन्ना, नारियल और अन्य पूजन सामग्रियों की दुकानों पर लोगों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। छठ पूजा, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से मनाया जाने वाला पर्व है, जिसमें सूर्य देवता की उपासना की जाती है। यह पर्व चार दिन तक चलता है और इसमें विशेष रूप से साफ–सफाई, पवित्रता और शुद्धता का ध्यान रखा जाता है। उरुवा मार्केट में इस पर्व के लिए एक अलग ही माहौल देखने को मिल रहा है, जहां एक ओर दुकानदार अपनी दुकानें सजाकर ग्राहकों को आकर्षित कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर श्रद्धालु अपनी जरूरत की सभी चीजें जुटाने में लगे हुए हैं। छठ पूजा में प्रसाद के रूप में ठेकुआ, कसार, नारियल और फल का विशेष महत्व है, और यही कारण है कि बाजार में इन वस्तुओं की बिक्री जोरों पर है। इस मौके पर दुकानदारों की भी खुशी देखते ही बनती है, क्योंकि उनकी बिक्री में इस त्योहार के दौरान अच्छी–खासी बढ़ोतरी होती है। छठ पर्व की तैयारी में जुटे लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। सुबह से ही उरुवा मार्केट में भीड़ लगनी शुरू हो गई थी और देर शाम तक ये सिलसिला जारी रहा। बाजार में सुरक्षा के मद्देनजर भी खास इंतजाम किए गए हैं, ताकि लोगों को किसी तरह की असुविधा न हो।

यजमानों की कुशलता के लिए किरन नंद गिरी बड़ी धूमधाम एवं गाजे बाजे के साथ गई छठघाट

पीपीगंज गोरखपुर। नगर पंचायत पीपीगंज में यजमानों की कुशलता के लिए किन्नर अखाड़ा महामंडलेश्वर किन्नर कल्याण बोर्ड की सदस्य कनकेश्वरी नन्द गिरी उर्फ किरन बाबा ने हर साल के भाती इस वर्ष भी वार्ड नंबर दो अपने आवास से तीन किलोमीटर जमीन पर लेटते हुए बाजे गाजे के साथ नाचते गाते सैंकड़ों महिलाओं के साथ छठ घाट पर पहुच कर डूबते सूर्य की पूजा अर्चना की।यजमानों ने फूल की बारिश कर किया स्वागत अपने यजमानों उनके बच्चों पूरे परिवार खुशी व प्रसन्नता के लिए मन्नत मांगी है। किन्नर अखाड़ा महामंडलेश्वर कनकेश्वरी नन्द गिरी उर्फ किरन बाबा ने गुरुवार को दिन में करीब दो बजे आवास से निकल कर लेटते हुए मेन बाजार दुर्गा मन्दिर होते हुए साहबगंज के काली मन्दिर पर स्थित छठ घाट पहुंचकर अस्तांचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया है ।इस मौके पर महामन्डेश्वर के सहयोगी किंन्नर शिल्पा, नयना, सिंदूर, नन्दनी, एकता, वार्ड नंबर 2 के सभासद एडवोकेट रामानंद दाढी वाले थानाध्यक्ष अरविन्द सिंह फोर्स के साथ,

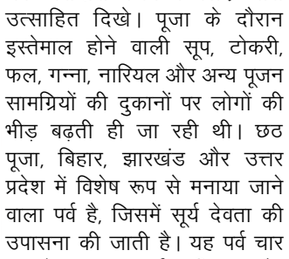

छठ के महापर्व पर, महिलाएं डूबते सूरज को दिया अर्घ्य

उनवल गोरखपुर । नगर पंचायत उनवल सहित अन्य गाँवो में महापर्व छठ पूजा को लेकर व्रती महिलाओं ने भगवान भास्कर की पूजा अर्चना करके खरना संपन्न किया। सूरज भगवान को दूध गुड़ से निर्मित खीर और धी की बनी रोटी का भोग लगाकर खरना किया गया। खरना का प्रसाद वितरण हुआ फिर मांगलिक गीत गाते हुए अपने घर को व्रती महिलाएं प्रस्थान की। थाना अंतर्गत नगर पंचायत उनवल, टेकवार झारखंडेश्वर शिवमंदिर पोखरे, आमी नदी के किनारे, नीलकण्ठ शिव मंदिर उनवल, बेनी पोखरा भक्तोलिया, पोखरा कन्या विद्यालय सहित विभिन्न गांवों, गोयसैरा, भिउरी, कोठा, कुडाभरत ,लमती भरवलिया, भालुआंन, सरया तिवारी, पुरासपार में महापर्व छट्ठ के पर्व पर सूर्य भगवान को अर्घ दिया गया। सभी पोखरो के किनारे विद्युत रोशनी व पेय जल की विशेष व्यवस्था की गई है। गांव प्रधानो व नगर प्रसासन द्वारा ने इस त्योहार को सम्पन्न कराने मे चढ बढ कर हिस्सा लिया। उस दौरान उनवल नगर पंचायत अध्यक्ष महेश कुमार दुबे, अधिशासी अधिकारी संजय कुमार सरोज, वरिष्ठ भाजपा नेता जनार्दन त्रिपाठी, भाजपा उनवल मंडल उपाध्यक्ष शचिन्द्र नाथ मिश्रा, पूर्व छात्र संघ महामंत्री प्रत्याशी प्रवीण कुमार चौधरी, डॉ राकेश त्रिपाठी, मनीष त्रिपाठी, अमित मिश्रा, अवधेश शर्मा, अमरनाथ साहनी, सभासद श्री प्रकाश गुप्ता, सभासद विनोद यादव, सभासद योगेश वर्मा, सभासद दिनेश कुमार शर्मा उर्फ दाउ, समाजसेवी विनय बजरंगी त्रिपाठी, विवेक कुमार मद्धेशिया, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष दिनेश साहनी, राकेश साहनी सहित नगर पंचायत के अन्य सम्भ्रान्त लोग छठ पूजा घाट पर मौजूद रहे। साथ ही खजनी एस डी एम कुंवर सचिन सिंह, तहसीलदार खजनी कृष्ण गोपाल त्रिपाठी, हल्का लेखपाल अभिषेक दिक्षित, खजनी थानाध्यक्ष सदानंद सिन्हा, चौकी इंचार्ज उनवल राजिव कुमार तिवारी अंडर ट्रेनिंग उप निरीक्षक जितेन्द्र यादव सहित अपने दल बल के साथ मुस्तैद दिखे।

प्रापर्टी डीलर की दिनदहाड़े हत्या से दहशत

देवरिया। जिले के सुरौली थाना क्षेत्र में गुरुवार को एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। वारदात करीब 11.30 बजे देवरिया पकड़ी बरांव मार्ग पर जद्दू परासिया पेट्रोल पंप के पास हुई। घटना की सूचना पर एसपी संकल्प शर्मा ने मौके पर पहुंचकर जानकारी ली। मदनपुर थाना क्षेत्र के समोगर गांव के रहने वाले विश्वजीत उर्फ राजू सिंह जिला मुख्यालय पर रामनाथ देवरिया मोहल्ले के मुंसफ कॉलोनी में मकान बनाकर रहते हैं। उनका बेटा निहाल सिंह (26) गुरुवार को बुलेट से अपने गांव समोगर से देवरिया आ रहा था।देवरिया–पकड़ी बरांव मार्ग पर जद्दू परसिया पेट्रोल पंप के पास करीब 11रू30 बजे पीछे से आए एक ही बाइक पर सवार तीन बदमाशों ने उसे गोली मार दी। आनन–फानन में उसे मेडिकल कॉलेज पहुंचाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। किसी पुरानी रंजिश में घटना को अंजाम दिए जाने की बात कही जा रही है। पिछले कुछ दिनों से निहाल सिंह प्रापर्टी खरीदने–बेचने का काम करता था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बदमाशों ने उसे तीन गोली मारी है।

लोक आस्था का महापर्व छठ पर्व पर डूबते सूर्य को दिया गया अर्घ

बनकटा देवरिया। बनकटा विकास खण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत बनकटा, सोहनपुर, जंजीरहा, रामपुर बुजुर्ग, इंगुरी, रतसिया, प्रतापपुर, रोहनिया, बंकुल, मिश्रौली, मिश्रौली घाट, बंगरूवा, चकरवा टोला प्रेमराय, खुरवसिया, भटवलिया, विशुनपुरा, पचरुखिया, बनकटिया, प्रतापछपर, खोराबार, बलुआ, मठिया आदि जगहों पर लोक आस्था का महापर्व छठ पर्व पर गुरुवार के शाम वर्तियों द्वारा डूबते सूर्य को अर्घ्य देकर मंगल कामना किया। मान्यता है कि छठ में शाम के समय डूबते सूर्य देवता को अर्घ्य देने से लंबी उम्र और सुख–शांति का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस मौके पर प्रशासन के लोग हर घाटों पर मुस्तैदी से तैनात रहे तथा क्षेत्रीय लोगों में पूर्व ग्राम प्रधान शिवप्रसाद सिंह, अनूप सिंह, हरिलाल सिंह, पवन कुमार, विनय पांडेय, रामाश्रय यादव, अरविंद मिश्रा, जितेन्द्र गुप्ता, बृजकिशोर यादव, पवन गुप्ता, चंदन सिंह प्रधान, मनोज भारती पिंटू शर्मा, रवि,

राष्ट्रीय स्तर पर चमक बिखेरेंगी जिले की दो बेटियां

सुलतानपुर (आरएनएस) वाराणसी में चल रही राज्य स्तरीय माध्यमिक विद्यालयी खेल कूद प्रतियोगिता सीनियर बालिका संवर्ग 800 मीटर दौड़ में साक्षी सिंह और जूनियर बालिका संवर्ग 3000 मीटर में शाहीन बानो ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया वहीं सीनियर संवर्ग में साक्षी सिंह को 1500 मीटर में रजत पदक से संतोष करना पड़ा। जिला विद्यालय निरीक्षक रविशंकर ने बताया कि जूनियर संवर्ग की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता आगामी 26 नवंबर से लखनऊ में आयोजित होगी वहीं सीनियर संवर्ग की प्रतियोगिता रांची में प्रस्तावित है। क्रीड़ा सचिव और टीम मैनेजर दिलीप सिंह ने बताया राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में अयोध्या मंडल की तरफ से कुल 21 खिलाड़ियों ने एथलेटिक्स में जिले से प्रतिभाग किया जिसमें जिले को 2 स्वर्ण व एक रजत पदक प्राप्त हुआ। 4 नवंबर से आयोजित पांच दिवसीय इस आयोजन में टीम कोच कौशलेंद्र सिंह, दिलीप कुमार रहे, अन्य सदस्यों में विनय कुमार सिंह, शशिकला मौर्य, स्मिता पाटिल, मुनेंद्र मिश्र, सुरेश यादव,संतशरण सिंह, वीरपाल सिंह, मंशा राम, बम बहादुर यादव की मौजूदगी में खिलाड़ियों ने बढ़िया प्रदर्शन किया स

सर्राफा लूटकाण्ड मामले में मुकदमा दर्ज करने में पुलिस कर रही हीलाहवाली

सुल्तानपुर(आरएनएस)। जिले के गोसाईगंज थाना क्षेत्र में बुधवार को सरेशाम आभूषण व्यवसायी को लहुलुहान कर हुई करीब 25 लाख की लूट मामले अभी तक मुकदमा नहीं दर्ज किया जा सका है। पुलिस हाथ में तहरीर लेकर भारी भरकम लूट को कम दिखाने को लेकर पंचायत कर रही है। सूत्रों की माने तो पुलिस का कहना कि तहरीर में आभूषण की निर्धारित कीमत नहीं, बल्कि सिर्फ लाखों में लिखा जाय। वहीं पीड़ित व्यापारी 25 लाख से कम आभूषण की कीमत तहरीर में लिखने को तैयार नहीं है। इसी को लेकर सुबह से पंचायत चल रही है। अब व्यापारियों का धैर्य डोलने लगा है। वहीं, पुलिस व्यापारी नेताओं को मैनेज करने में लगा रहा। नेता भी व्यापारियों के खिलाफ जाने को तैयार नहीं है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक प्रेम चंद्र से बात करने का प्रयास किया गया तो उन्होंने फोन काट दिया।वही सीओ जयसिंहपुर रमेश ने बताया कि सेमरी में है मुकदमा दर्ज हुआ कि नही जानकारी नहीं है।

सिर्फ पीड़ितों को और पीड़ित करते है साइबर थाने के जिम्मेदार

सुल्तानपुर(आरएनएस)। साइबर थाने में मुकदमा दर्ज कराना टेढ़ी खीर हो गई है। खाते से लाखों रुपए साइबर अपराधियों ने उड़ा दिए लेकिन पुलिस लाइन में स्थित साइबर दफ्तर में पीड़ितों की दरखास्त धूल फांक रही है। बगैर मुकदमा दर्ज किये यहाँ जांच की बात कहकर पीड़ितों को टरका दिया जाता है। वही लुटा हुआ पीड़ित जब बैंक से डिटेल लेने जाता है तो उसे कहा जाता है कि पहले एफआईआर कॉपी लाइए फिर संबंधित जांच में सहयोग की जाएगी । वहीं साइबर सेल के प्रभारी कहते हैं कि जब जांच साइबर सेल पुलिस कर रही है तो बैंक को एफआईआर कॉपी देने का क्या मतलब है ? जबकि साइबर सेल प्रभारी खुद स्वीकार कर रहे हैं कि बगैर एफआईआर दर्ज कराए भी जांच होती है। बीते 4 नवंबर को साइबर थाना प्रभारी को दरखास्त देकर मुकदमा दर्ज करने का दरखास्त दी थी। पीड़ित मुकेश ने बताया कि उनके गर्भवती पत्नी को अनुदान देने के नाम पर फोन आया था और उनके खाते से लगभग 78000ध्–द खाते से गायब हो गए।। वह बैंक गए तो उन्हें बताया गया कि जाइए और एफआईआर कॉपी लाइए । दूसरा और तीसरा मामला गोसाईगंज थाना क्षेत्र के जासापारा गांव का है जहां पर मातृत्व लाभ योजना के लिए साइबर अपराधियों ने फोन करके दो लोगों के खातों से क्रमशः 20000ध्–द व लगभग 40000ध्–द हजारों रुपए उड़ा लिए।चौथा मामला शहर के हृदय स्थली चौक का है जहां पर फर्जी वेबसाइट से एक युवक को तकरीबन 15 लाख रुपए की चपत लगा दी गई । उसने मामले की शिकायत साइबर सेल को भी की। यहां तक कि उसने अपनी फरियाद क्षेत्राधिकार नगर से भी की लेकिन साइबर थाना प्रभारी ने भागदौड़ से बचने के लिए यानी होमवर्क कम करने के लिए प्राथमिक कि नहीं दर्ज की ।इसके अलावा भी कई मामले जिनको साइबर थाने द्वारा कोई सपोर्ट नहीं किया जा रहा है। ऐसे ही मिलते जुलते न जाने कितने मामले जिनको पुलिस दर्ज करने की बजाय ठंडा बस्ती में डाल देती है। कहीं तो भोले भाले ऐसे प्रार्थी हैं जिनको जांच के नाम पर दौड़ाया जाता रहता है । पता चला है कि तहरीर का वजन किया जाता है, जबकि साइबर से जुड़े अपराधों के लिए रोज नई तकरीबन रोज नई एडवाइजरी जारी हो रही लेकिन साइबर थाने की पुलिस एक्टिविटी शिथिल पड़ गई अब तो घटना का वर्कआउट का प्रेस नोट भी नहीं जारी हो रही।

बिना जांच कोटा बहाल होने पर ग्रामीण पहुंचे डीएम के द्वार, की शिकायत

सुल्तानपुर(आरएनएस)। चार माह तक हवा में जांच की गई। फिर निष्पक्ष जांच न कर कोटे को बहाल कर दिया गया। जब कई वर्षों से जमे कोटेदार के यहां राशन से लदा वाहन पहुंचा तो शिकायतकर्ता राशन कार्ड धारकों में हड़कम्प मच गया।फिलहाल दर्जनों ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर डीएम के जनता दरबार मे शिकायत की है।

मामला कूरेभार ब्लाक के सैदखानपुर गांव का है। यह गांव 15 पुरवो से संचालित हैं। इस गांव में एक कोटा नही दो कोटे की जरूरत हैं।पिछले चार माह पहले कोटेदार शीतला यादव के खिलाफ करीब 70 राशन कार्ड धारकों मय शपथपत्र शिकायत किया था। निष्पक्ष जांच के लिए जनप्रतिनिधि ने भी अफसरों से कहा था।शिकायत होते ही कोटा निलंबित भी कर दिया गया। एसडीएम सदर विपिन द्विवेदी ने डीएसओ जीवेश मौर्य को निष्पक्ष जांच को कहा। ऐसे में शिकायतकर्ता ग्रामीणों का आरोप है कि कोटेदार से डीएसओ जीवेश मौर्य व सप्लाई इंस्पेक्टर मयंक चतुर्वेदी मिल गए है जिसके चलते कागजी खाना पूर्ति की गई है।15 पुरवो में बयान लेने के बजाय एक दो पुरवो के 10–12 लोगो से ही बयान ले क्लीन चिट दे दी है।कोटेदार पर तीन चार किलो राशन कम देने व मनमानी वितरण का आरोप लगा था।निष्पक्ष जांच न होने से ग्रामीणों में आक्रोश है। जांच के दिन व पहले भी कोटेदार व उनके लड़के ने ग्रामीणों को धमकी भी दिया है। जिसकी वीडियो वायरल है। फिलहाल गुरुवार को दर्जनों ग्रामीण शिवशंकर यादव, सूर्य भान यादव, राम प्रसाद दुबे, विनय सिंह, ओम प्रकाश दुबे, विजय कुमार,जय प्रकाश, राम धीरज, राम जन्म दुलारी, हरिराम समेत दर्जनों राशन कार्ड धारको ने डीएम के जनता दरबार मे सीडीओ अंकुर कौशिक से किया है।

स्वामी,प्रकाशक,मुद्रक,**सम्पादक कपिल देव शुक्ल** द्वारा विभव प्रिंटर्स गाटा सं025 लोलेपुर सुलतानपुर उ० प्र०. से मुद्रित तथा सलीमपुर ग्रेन्ट, पो० व थाना कुरेभार, जिला–सुलतानपुर (उ०प्र०) से प्रकाशित **सम्पादक– कपिल देव शुक्ल**,
मो० 9415739288,9721748962
E-mail: kdshukla-79@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सुल्तानपुर न्यायालय होगा।